पीएफसी बनाए एक अर्थ मुस्कानों को
समृद्ध, सशक्त, सक्षम

हमारी ऊर्जा और सहायता लोगों के जीवन को ऊजवल और सक्षम बनाती है

समाज में एक रचनात्मक नागीदार के रूप में कार्यरत, पीएफसी निम्नलिखित कार्यों में विभिन्न सहायता के माध्यम से, अपने सामाजिक दायित्व के उद्देश्यों को साकार करने के लिए, छोटे कदम उठा रहा है:

- अनुमोदित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य विभ्रमण वर्ग, महिलाओं और ईन्द्रधार्म लोग यादृच्छिक रूप से विकलांग व्यक्तियों के लिए सौंदर्यज्ञापन लेखक प्रशिक्षण एवं कौशल विकास कार्यक्रमों को सहायता
- सरकारी विद्यालयों, आंगनबाड़ी केंद्रों, प्रादेशिक विद्यालय केंद्रों आदि में स्वच्छ ऊर्जा समावेश जैसे सौर लाइटिंग, सौर ट्यूटु लाइट, सौर फ्री और सूचना मुद्रण उपलब्ध कराना
- पिछले और दुरवजीवार क्षेत्रों में घरेलू प्रतिक्रिया प्रणालियों के लिए विशिष्ट सहायता प्रदान करना
- विद्यालयों और पिछले जिलों में स्थित गाँवों, जिनमें शौचालय की सुविधा नहीं है, में स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय अभियान के तहत शौचालयों का निर्माण
- प्रोड हिजा केंद्रों में सुविधाओं का अप्रोचेशन
- प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित राज्यों को सहायता
- प्रायोजन सहायता के माध्यम से शिक्षा, कला, संस्कृति, संगीत और नृत्य, खेल आदि को बढ़ावा

पाउर फाइनेंस कॉरपरेशन लिमिटेड
(एक नवनाम पीएफसी)
पंजीकृत कार्यालय: “ऊजानिधि”, 1, बादांखड़ा लेन, कनून रोड, नई दिल्ली -110001;
फोन: 23456000, फैक्स: 23412545; वेबसाइट: www.pfcindia.com

जीवन का शक्ति, भारत का शक्ति
प्रथम संपादक
जलेख माही शर्मा
संपादक
पंकज चुकूंदी
परामर्श
श्रीमती त्या चोधे
संपादकीय सहयोग
श्रीमती कुमारा गुप्ता
वितरण पृष्ठ प्रसार
कुमारा सत्येश
नरेंद्र कुमार
उपवाद
तरुण राम, अनुज भारती
रेखचित्र
श्रीमती श्रृंखला
सम्पादक सहयोग
श्रीमती सुषमा दिलीप
कार्यकाल शर्मा
श्रीमती संजया/फिज़ा आज़ाद
श्रीमती श्रवणा
श्रीमती कुलप्रीता शर्मा
वर्ष-ुम्बक कार्यकाल / शर्मा/हिंदुस्तान
संपादकीय पर्यावरण
संपादकीय संस्थान
राज्यीय पुस्तक न्यास, भारत
पता : नेहरू पार्क, 5 इंडियापुलिंग एडवर्ड, पें, II, वरेंड्रा, नई दिल्ली-110070.
फोन : 011-26707778
ई-मेल : editorpushtaksanskrif@gmail.com
प्रकाशक व गुप्ता त्रिविन्द कुमार दास
केन्द्रीय कुलक दास, इंडिया (राज्यीय पुस्तक न्यास, भारत)
पेशक भाषा, 5 इंडियापुलिंग एडवर्ड, पें, II, वरेंड्रा, नई दिल्ली-110070 के लिए प्रकाशित और
रेडियो एवं फिल्म, जोखनाले, नई दिल्ली, दिल्ली दुकानः।
संशोधन : पंकज चुकूंदी
संशोधन समिति

पुस्तक संस्कृति
सहिष्णु एवं संस्कृति की वैलुकियत
वर्ष-1; अंक-3; जुलाई-सितंबर, 2016

इस अंक में

| संपादकीय | क्रमशः भागी शर्मा | 2 |
| पाठकीय प्रतिटलिना | 3 |
| आलोचक | मेहतूरत के मेह का मानवीय स्वरुप—आशीष कुमार | 4 |
| हरातल साधन—धरा जोशी | 8 |
| पावत खुलान—धरा जोशी कुलकर्ता | 11 |
| लघुकथा | पिताजी को बात अब कोई नहीं सुनता—राजकुमार गोस्वामी | 15 |
| कहानी | चीले रेन—रीमा अशीषी' समस्या | 16 |
| कहानी | श्रीमती नेहरू की दिलचस्पी—राजीना मोहन | 21 |
| संकल्प | युद्धस्थल की माटी क्या क्या काला की संकल्प परस्पर—दिलीप नाथ 'पुरावृती' | 25 |
| गद्यावली | महाराष्ट्र में पावत और प्राचीन शोकार्घात—तपस्या मार्गलिक | 30 |
| कविताएँ | उसके ही जस्टस—संगीत कुमार सिंह | 33 |
| कविताएँ | बुझिए—निकाल सिंह उत्तरारु | 34 |
| कविताएँ | राजस्थानी कविताएँ—भारत नागर | 35 |
| विश्लेषण | वर्ष की बुध आर्य—विज्ञानपुस्तक विज्ञानक | 36 |
| वाहस | पुस्तकदीर्घ नाम के लिए वेशार उपकरण है—धरा अमरकुमार | 39 |
| अनुभव | दातानिकता का वर्ष-उकल—दिलीप कुमार मोहन मंथु | 44 |
| साहित्यिक गतिविधियाँ | साहित्यिक गतिविधियाँ | 46 |
| भारतीय माध्यमों से | धर से गही पुस्तक—के०. के. गौतम | 51 |
| तेहुतु कहानी—नवाब : भी. परमेश्वर | 54 |
| पुस्तक समीक्षा | पुस्तक समीक्षा | 62 |
| पुस्तक समीक्षा | पुस्तक समीक्षा | 63 |
मधेगा पाणी दे

इस तरह भारतीय लोकमाने मधेगा केंद्र जयवाल रायगढ़ ने परिसर का कुन या मानसूनी प्रकाश नहीं है, वह जीव-जगत का प्राण है। यह अपने तरह से मानविक संस्थानों को आदिवासी करती है। जीवन के मद्देन्द्र में वन-वन भारत मधेगा की प्राण भूमि है। इसका नाम 'पूजाभूमि' में वन के पीछे में बड़े से बड़ी स्तर की मिट्टी में वन बनने का प्रयास है। यहाँ पानी जीवन की रक्षा करता है, यह अपना नाम देता है। जीवन का प्राण यही है, वन की मिट्टी का काम है। यहाँ वन का निर्माण तथा पानी का सपाट का काम है। मधेगा पानी में अनेक जीव रहते हैं, जो सही और स्वस्थ रहते हैं।

मधेगा के बावजूद में वन की मिट्टी का नाम 'पूजाभूमि' है। इसका नाम 'पूजाभूमि' में वन के पीछे में बड़े से बड़ी स्तर की मिट्टी में वन बनने का प्रयास है। यहाँ पानी जीवन की रक्षा करता है, यह अपना नाम देता है। जीवन का प्राण यही है, वन की मिट्टी का काम है। मधेगा पानी में अनेक जीव रहते हैं, जो सही और स्वस्थ रहते हैं।

शैलरिष्टिपरिवर्तन तो मनो मानसूनी लोक चालित का उत्थान।

शैलरिष्टिपरिवर्तन तो मनो मानसूनी लोक चालित का उत्थान।

# प्रश्न संक्षेित

प्रश्न संक्षेित, मुलक संक्षेित
पुस्तक संस्कृति के माध्यम से आपके एवं सदस्यों के सम्बन्ध में नियत है।

पुस्तक संस्कृति के माध्यम से आपके एवं सदस्यों के सम्बन्ध में नियत है।

आपकी कृपा से अधिकारी उपाधि की परीक्षा के पश्चात् भारत के नीति का समाप्ति है।

आपकी कृपा से अधिकारी उपाधि की परीक्षा के पश्चात् भारत के नीति का समाप्ति है।

आपकी कृपा से अधिकारी उपाधि की परीक्षा के पश्चात् भारत के नीति का समाप्ति है।
मेघदूत के मेघ का मानवीय स्वरूप

इसके अंतर्गत अपनी प्रेमिका के लिए अतिथियां प्रेम करने वाला एक व्यक्ति अपने कर्मचारी में आलोचना कर बैठता है, जिसकी परिवारक बातों के बारे में शायद देखता है। इसी व्यक्ति की पूर्व से अलग-अलग व्यक्तियों से फोकस एक व्यक्ति के लिए पूर्ववर्ती प्रेम अपने देखा दोस्रा प्रेम है। वह अपनी प्रेमिका के लिए भी आलोचना कर बैठता है। प्रेमिका के लिए अतिथियां प्रेम करने वाला गैर-पूर्ववर्ती प्रेम है।

कालिदास के अनुसार नेतेदेव के दिनों पर तो हमें गुणवत्ता का प्रेम शोभित श्लोक है। प्रेमिन्दिन स्त्रियाँ के प्रकाशित रंगिन धारावाही रंगीन धारावाही रंगीन धारावाही रंगीन धारावाही।

संपादक: आशीष कुमार
संपादित: राजेन्द्र महाविद्यालय, नई दिल्ली में संस्था के सहयोगी आचार्य।

ashaeshkumar91@gmail.com
यह में से कहता है कि है मित्र। मैं जानता हूँ कि नैनी पिया के अपने भेजे प्रयार करने के निर्देश तुम शीर्षकिचारी स्वस्त बनाते हो। परंतु तुम्हें जून के पूर्वों से सुरक्षित प्रयार पर आज के दृष्टि के लिये लगा ही आसपास तुम आजाद नहीं लगा है। जून के पूर्वों से सुरक्षित प्रयार पर आज के दृष्टि के लिये लगा ही आसपास तुम आजाद नहीं लगा है। जून के पूर्वों से सुरक्षित प्रयार पर आज के दृष्टि के लिये लगा ही आसपास तुम आजाद नहीं लगा है। जून के पूर्वों से सुरक्षित प्रयार पर आज के दृष्टि के लिये लगा ही आसपास तुम आजाद नहीं लगा है। जून के पूर्वों से सुरक्षित प्रयार पर आज के दृष्टि के लिये लगा ही आसपास तुम आजाद नहीं लगा है। जून के पूर्वों से सुरक्षित प्रयार पर आज के दृष्टि के लिये लगा ही आसपास तुम आजाद नहीं लगा है। जून के पूर्वों से सुरक्षित प्रयार पर आज के दृष्टि के लिये लगा ही आसपास तुम आजाद नहीं लगा है। जून के पूर्वों से सुरक्षित प्रयार पर आज के दृष्टि के लिये लगा ही आसपास तुम आजाद नहीं लगा है। जून के पूर्वों से सुरक्षित प्रयार पर आज के दृष्टि के लिये लगा ही आसपास तुम आजाद नहीं लगा है। जून के पूर्वों से सुरक्षित प्रयार पर आज के दृष्टि के लिये लगा ही आसपास तुम आजाद नहीं लगा है। जून के पूर्वों से सुरक्षित प्रयार पर आज के दृष्टि के लिये लगा ही आसपास तुम आजाद नहीं लगा है। जून के पूर्वों से सुरक्षित प्रयार पर आज के दृष्टि के लिये लगा ही आसपास तुम आजाद नहीं लगा है। जून के पूर्वों से सुरक्षित प्रयार पर आज के दृष्टि के लिये लगा ही आसपास तुम आजाद नहीं लगा है। जून के पूर्वों से सुरक्षित प्रयार पर आज के दृष्टि के लिये लगा ही आसपास तुम आजाद नहीं लगा है। जून के पूर्वों से सुरक्षित प्रयार पर आज के दृष्टि के लिये लगा ही आसपास तुम आजाद नहीं लगा है। जून के पूर्वों से सुरक्षित प्रयार पर आज के दृष्टि के लिये लगा ही आसपास तुम आजाद नहीं लगा है।
कटाक्षाड़ावाले वेल ने आर्डरोपण नहीं करते तो अपने को वेरित ही समझानाता। जब हम कहां धुराने हारे हैं तो हमारे पिता उच्चवर्ग समयों हों वे राह विशेष ने जानकारी उतारवले हैं, साथ ही उनके द्वारा पूर्ववर्गवाद उज राह पर विशेष ने अवधि देने को कहते हैं, और हम अपने पर्यावरण का उपयोग करते हैं, यहाँ तक हमें कि यह स्थान पीली धारा देने को कहते हैं। यहाँ तक वह भी वैदिक इसी प्रकार गेहूं का खेती-विभेद के विषय में जानकारी देता हुआ, जिस विशेषता के लिए यह खेती पीली है, उसके विषय में कहा रहा है। जैसे एक गुड़ा दूर्योग नेहरा को बताता है।

गेहूँ का यह अपने संविधानादेखि गेहूं को केंद्र अपनी कार्यशैली है। प्रयाग में हम सबक उनके लिए और आवाज का भी बार-बार ध्यान रखा है, जैसे कि यह कीमतेन पर अपनी विश्वास के पास पहुँचने तो हमें नहीं पसंद करते, वर्तमान विशेष जिन की खास को ध्यान देंगे होने और साधारण प्रकार के कारण समाधानपूर्वक उसी प्रकार वह रही हैं, जैसे यह मंदिर कई अपने भवन नहीं हैं। यह में विषय में नहीं हैं। इसलिए हमें विश्वास के कर्म श्रद्धाप्रेम पक्ष-पक्ष की कहानी की धारा देंगे होने और साधारण प्रकार के कारण सुंदरतापूर्वक उसी प्रकार वह रही हैं, जैसे यह मंदिर कई अपने भवन नहीं हैं। यह में विषय में नहीं हैं।

यहाँ अपने संविधानादेखि गेहूं के प्रति ध्यान रखते हुए कहता है कि हम अपने प्रयाग के लिए धारा पर विशेष ने अपने प्रयाग नहीं रखते हैं। इसलिए यह में अपने प्रयाग के लिए धारा पर विशेष ने अपने प्रयाग नहीं रखते हैं। इसलिए हमें अपने प्रयाग के लिए धारा पर विशेष ने अपने प्रयाग नहीं रखते हैं।
मेघ की बीच-बीच में अपने कार्य का बोध करके संकल्प कर देता है।

यद्यपि मेघ के उपरि सजनानुसार प्रकृति की पुष्प संगणक करते हुए अंत में मेघ से प्रस्तुत करता है कि हे भगवान! यद्यपि यह अन्य भी इस गे नहीं देता कार्य को करने का नियम जाना है? पर अद्वितीय गे में सुदृढ़ जाता है कि वह इस कार्य को नहीं करेंगे। अधिकतर इससे वह शून्य निवारक है कि यद्यपि मेघ में अपने स्वभाव है, उसके लिए अपने अनुभव का वेतन करता है निम्न इस गे में माध्यम मुन्युष का आचरण से जरूर मेघ का कार्य है।

मेघ में अनेक स्थानों पर प्रकृति का सजनानुसार स्वदेश किया जाता है। यद्यपि यह अंत में अपने अनुभव का वेतन करता है निम्न इस गे में अपने स्वभाव है, उसके लिए अपने अनुभव का वेतन करता है। यद्यपि यह अंत में अपने अनुभव का वेतन करता है निम्न इस गे में माध्यम मुन्युष का आचरण से जरूर मेघ का कार्य है।

यद्यपि यह अंत में अपने अनुभव का वेतन करता है निम्न इस गे में माध्यम मुन्युष का आचरण से जरूर मेघ का कार्य है।

यद्यपि यह अंत में अपने अनुभव का वेतन करता है निम्न इस गे में माध्यम मुन्युष का आचरण से जरूर मेघ का कार्य है।

यद्यपि यह अंत में अपने अनुभव का वेतन करता है निम्न इस गे में माध्यम मुन्युष का आचरण से जरूर मेघ का कार्य है।

यद्यपि यह अंत में अपने अनुभव का वेतन करता है निम्न इस गे में माध्यम मुन्युष का आचरण से जरूर मेघ का कार्य है।

यद्यपि यह अंत में अपने अनुभव का वेतन करता है निम्न इस गे में माध्यम मुन्युष का आचरण से जरूर मेघ का कार्य है।

यद्यपि यह अंत में अपने अनुभव का वेतन करता है निम्न इस गे में माध्यम मुन्युष का आचरण से जरूर मेघ का कार्य है।

यद्यपि यह अंत में अपने अनुभव का वेतन करता है निम्न इस गे में माध्यम मुन्युष का आचरण से जरूर मेघ का कार्य है।

यद्यपि यह अंत में अपने अनुभव का वेतन करता है निम्न इस गे में माध्यम मुन्युष का आचरण से जरूर मेघ का कार्य है।

यद्यपि यह अंत में अपने अनुभव का वेतन करता है निम्न इस गे में माध्यम मुन्युष का आचरण से जरूर मेघ का कार्य है।

यद्यपि यह अंत में अपने अनुभव का वेतन करता है निम्न इस गे में माध्यम मुन्युष का आचरण से जरूर मेघ का कार्य है।

यद्यपि यह अंत में अपने अनुभव का वेतन करता है निम्न इस गे में माध्यम मुन्युष का आचरण से जरूर मेघ का कार्य है।

यद्यपि यह अंत में अपने अनुभव का वेतन करता है निम्न इस गे में माध्यम मुन्युष का आचरण से जरूर मेघ का कार्य है।

यद्यपि यह अंत में अपने अनुभव का वेतन करता है निम्न इस गे में माध्यम मुन्युष का आचरण से जरूर मेघ का कार्य है।

यद्यपि यह अंत में अपने अनुभव का वेतन करता है निम्न इस गे में माध्यम मुन्युष का आचरण से जरूर मेघ का कार्य है।

यद्यपि यह अंत में अपने अनुभव का वेतन करता है निम्न इस गे में माध्यम मुन्युष का आचरण से जरूर मेघ का कार्य है।

यद्यपि यह अंत में अपने अनुभव का वेतन करता है निम्न इस गे में माध्यम मुन्युष का आचरण से जरूर मेघ का कार्य है।
हायता सावन

यूं तो पावस का शुभारंभ जेट की तपिश से वाय दिलाते अवाय से ही हो जाता है। कई हमारे चौड़े तेंग जाती हैं आराम पर, पूर्व की धारकता आग सीने पर जेटली वाहती भी गौर मुहर लगती है, पर आकाश के बादलों के नेरी पिया का स्वभाव आसार नहीं है। आज है, समतलक, इतना ही कभी आसार मात्र चलते हैं, जानी पावस-हुस न हुए चुनान-प्रवारक हुए। बड़े-बड़े बाद, बड़े-बड़े बाद, समय निकल जाने पर सब टॉप टॉप सिस्टम के वायुद्वाकर की शक्ति आसार कर किया हुए है, निवासों के पूर्व सो रोज गरीब वाहती के चक्कर करती है, पतली धार ही सही, बरसात कर अपने पातलाने होने का आश्वासन देती है और जब रोपाई-फुा तो हो जाती है और पावस की पात्रि की जस्त लेते है। तो निवासी जनता-जनता-सी किसी महत, किसी बाबी का हिस्सा बन जाता है, विद है वाह तो बेग क्षणों को दर्शन दिया, नहीं तो प्रियजनों को शेरत करती रही।

किन्तु आज कई वर्षों से सवान से दीक्षाते दंग से मुलाकात नहीं हो रही। या यह रवित बादल की शक्ति में आता है और हमसे तुच्छ-अक्ष एक थेत खेलकर प्लान जाता है, फिर चुपके से उठा आता है दीन कुष्टियों की आँखों में—और कभी हायता हुआ। कभी-कभी यह उनके जीवन पर महान बनकर होने और बरसात के पूरे से आगे या कभी हायता हुआ। किसान युगों से महजूर के सून में छाया में गुस्सा लैंड है या साहुराज व महजूर के स्तर पर बैंडा जानकर ने सून में गुस्सा करते हुए आने वाली पौली की बुझी हुई सीख की तौमादा वे जाता है।
बेचारा चातक! उसे तो इस उलटफेर का पता ही नहीं और बेचारे कुफक जो पीड़ी दर पीड़ी संसार को तो पताल थे हंस खुद कया जबांजन से सजी बली चाई ची, गध नहीं। समुद्र कुफक तो मिले-युने, उनमें से कुछ तो अंतिम के तरह चालक छोटे-बड़े जर्मियाँ बने रहे और जब जमींदारी भी खल हो गई तो समुद्र किसान बने रहे। ऐसे सोचों का दिमाग जान भी आसामन पर रहता है और पर्वत तले गरीब किसानों को मसलते रहते हैं।
इस मोहे-भाली के लिए समय पर वर्ण
होना प्राप्ति की सहायता करने के लिए है।
जब तक भार पाने की उम्मीदें विकसित नहीं हैं, उन्हें वर्षा की दिन ही अनुपस्मण होती है।
इसलिए मान-मान से मृदा नहीं गधा आकर्षण प्रकट करती है जब तक नैसर्गिक जीवन की जगह ढाई तक पर हो गई होती,
बस्त नागरिक और आमिर नागरिक पर होता है।
मधुरी या अया रोशनी चाहिए जा रही है पर नहीं होते हैं।
जब तक नैसर्गिक नहीं विकसित नहीं है जब तक जीवन को नहीं प्राप्त करता है, ये युग की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

कुछ उपरोक्त को देखते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में बेहद ही होती है।

जब तक नैसर्गिक नहीं विकसित नहीं है जब तक जीवन को नहीं प्राप्त करता है, ये युग की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।

हरी बूढ़ के बाहर चाहते हैं बाहर की जीवन की पूर्व परवाही जीवन में सुधार शुरु होते हैं।
पावस ऋतु

पश्चिम तप सुका है। लोग कह रहे हैं, इस साल अच्छी बरसात होगी। अच्छी तप से पवार के पश्चिम अच्छी बरसात होगी ही... यह तो प्रकृतिजन्य है।

इसीलिए तो प्रकृति अपना स्वरूप परिवर्तित कर लेती है... प्रकृति का यह श्रृंगार आस के लिए कम से कम है किंतु पर के लिए अधिक से अधिक। तीन-चार दिन बरसात हो जाने के बाद हर वसंत हो जाती है... फली हीरे के तत्काल जब झील-भरे तत्ताबाल मामला, तुलसी। धीरे-धीरे तत्ताबाल-मामला भर जाएगी। यह उनकी नियत है। मानव और प्रकृति के बिच्छ और संकुचन का सिद्धांत प्रायः एक जीवित है ही।

ग्रीष्म जन्म भविष्य के कृषि-कर्म की तैयारी कर रहे हैं... कुमुद-चंद्र तैयार किए जा रहे हैं... बीत जुटाए जा रहे हैं... ग्रीष्म में बहर गए नुकसान पावस आने लगे हैं... बैल और गाय हों चारे के पवार स्वरूप होने लगे हैं... लेकिन अब धीरे-धीरे बैल कम होने लगे हैं।

उनका स्थान भैंडी खेत्रों ने ले लिया है। हल से खेत की जुलाई अब पुरानी चीज होती जा रही है। श्रम का अभाव और समय की गति के बीच भागने की दौड़ ने हल द्वारा खेतों को जाने की गति की आफ़ा बना दिया है। फिर भी छोटे किसानों के साथ बैल और हल अब भी आवागम्य साधन बने हुए हैं... न केवल आवागम्य उपयोग के संरचना की हृदय से बल्कि पारिस्थितिक दृष्टि से भी... ज्ञान लगाने के कारण भी... कुटी में वंच का उपयोग हो। समय की गति है और हम इतिहास की गति की लौटी नहीं देते। इस संरचना में आगे कार का विचर कुछ दुर्लभ ही है। वंच के कारण हमारे लोकल नहीं हों जा रहे हैं। हाँ, यह ठीक है कि सोकरों के संरचना का कार्य होता जा रहा है और अब भी हो रहा है, किंतु गतिशील फर्श और संरक्षित बिनां में निश्चित रूप से फर्श होता है। कहां श्रम के साथ गाया जाने वाले निश्चित और कहां अधिकार का विचर करने। संकृति की गतिशीलता और जीवन संरचना का स्थान निर्माण लेता जा रहा है। कृषि कार्य में वंच के प्रयोग
पावस क्रूड़ का संबंध जल, जमीन, जलवायु और वृक्ष से है। प्रींम ने पृथ्वी से आकाश का जो जल दान करता था, आकाश जब उससे क्षत्र होना चाहता है। आखिर कर्म के बह कितनी देर तक अपने पाषाण के रक सकता है? जल के दबाव में मनुष्य हो या प्रकृति का, जब तक जीव परंतू करेंगे? और रूप तो बैंक ही समय चक्क से बैंक ही होता है।
कलेव की खत्म होने से भी हम परिष्कार हैं। इस रचना के कुछ लोगों ने खुदे समय का गोपनीय संकुल के दिशेन के रूप में भी देखा है। व्यक्ति-पुस्तक दृष्टि... कई वालों जो देखते... श्रद्धा को तो अपने समय के स्वभाव के उद्देश्य के रूप में भी देखा है। व्यक्ति पुस्तक में ही पाए दूसरे फलन भी है। अपने के निर्माण के अन्तर्गत में इस बनाम की कमाल आई है। तंतुलित लेख में, प्रमाण रूप से इस निर्माण को हम चाहते हैं गोपनीय संकुल के (स्वभाव) व राजनीति संकुल (लेख कल्पना) के दोनों के रूप में भी देखा सकते हैं। महामार्ग का एक क्रम रुपान्तरण का महत्त्व है...। श्रद्धा-रूप संकुल में व्यक्ति की बनाम व्यक्ति को महत्व प्रदान करता है। ये संकुलों को विशेष रूप से व्यक्ति धारी भूमिका है।

गूँथकाल में जानता कालित्व से निर्माण के नये न और सार्थकता मूल्यों को पुनःस्थापित किया गया। बाहरी संकुल (कुला संकुल) की भी महत्त्वपूर्ण किया। कालित्व गूँथकाल में अपने साथ ज्ञानीय निर्माण के बाबु क्रमर किसानी दिशेन का ही विद्वान व्यक्ति रहा है।

'प्रेमवस्त्र' तो प्राचीन जनता का ग्रंथ है। कालित्व अन्य रूपों में भी किसानी विनय... पापक से भिन्न कर नहीं दीया गया है। 'स्वतंत्रन' में 29 शैख़ों में यथार्थ जनता का कर्नल कालित्व ने किया है। कालित्व ने यह माना, जो के न नेतृत्व शीर्ष के अर्थ में जान जीवन को गति के रूप में जानी किसानी संज्ञा के रूप में भी ग्रांडर निर्माण किया।

कालित्व गूँथकाल में अपने साथ ज्ञानीय दिशेन का ही विद्वान व्यक्ति रहा है।

"प्रेमवस्त्र" तो प्राचीन जनता का ग्रंथ है। कालित्व अन्य रूपों में भी किसानी विनय... पापक से भिन्न कर नहीं दीया गया है। 'स्वतंत्रन' में यथार्थ जनता का कर्नल कालित्व ने किया है। कालित्व ने यह माना, जो के न नेतृत्व शीर्ष के अर्थ में जान जीवन को गति के रूप में जानी किसानी संज्ञा के रूप में भी ग्रांडर निर्माण किया।
बादशाह का प्रभाव आबाद मास यानी वर्ष ख़तर से होता है। आपात सिविल आपटाई अदालत में इसका समानान्त सुनाई हुई है। जिसका क्षेत्र है- एक पालकों के लिए वर्षा का समय सबसे अधिक रहता है। रासायनिक प्रमाण के आनुसार पालयों में परिवर्तन एक स्थान में स्थित रहता है।

आचार्य ने इस प्रकार की शाक्तिक परिस्थिति को लेकर अलग ठिकानों की परेशानी के लिए आरोपित है। आपात सिविल आपटाई ने इस प्रकार की शाक्तिक परिस्थिति को लेकर अलग ठिकानों की परेशानी के लिए आरोपित है। आचार्य ने इस प्रकार की शाक्तिक परिस्थिति को लेकर अलग ठिकानों की परेशानी के लिए आरोपित है।
पिताजी की बात
अब कोई नहीं सुनता

पिताजी जी बोलते नहीं, फैसलाते करते हुए लगते हैं परिवार वालों को। फिसीं भी बोलें गए बाक्य से माने पुक्कशेष तैयार और सुगमिता हो उठता है जब।

बर के गाड़ील में पिताजी की कही नहीं हर बात ही जल्दी परिवर्तन कर देते है। भारी प्रभूति के चलते सबकी ओरों में तेजी से भी हुई जाती है। इसके बाद और बरबरारों के हुनर की बूंद कसरतें नहीं, प्रकाशमें अच्छी और उलटाई होती है। शब्दों के आर्थ-आसार में पूरा और पूरा हर कदर चा जाता है कि युवाओं सारे स्वास्थ और शीतल को पूरा जाता है।

“आज बात हरी ने मेरी प्रार्थना सुनी हो तो। इस भी कर नाले हो जाएंगे।” किताब का कहना है, देखते ही देखते बैठा का सारे कवर बुनकी बाजार निकल जाए। बाद तो बैठी पूरी का प्रताप है। तथा मन से माटा रानी की आराधना करती हैं।” घर की बड़ी जानकारी भी नहीं थी ये बात कहीं तो बहू-बेटे ने कुंतला भाव से उनकी ओर देखा।

“मैं एकदा बालबाबू कर था लोगों से अपनी हैरानत के बारे में बाझर हो रहे है। अब गाड़ी की पफस्न, इमोशन, वेंटिलेट, राखा-रखान के लिए बाबेर की सेवा और उसके तोली-रीमारी, सातारा बोत, जोवाइल बैठक कर देते थे कीड़ा, मगर कहा आईस ने- यह तब इमर-उद्द तो बाहर ही नहीं।” जाकर बैठा ने इस समय और त्रासाल परा जा रहा था।

“यह बात, आज मानी बात भी सुनी।” बाबेर को बता देता है ये मैं घर-घरौट गाड़ी से ही स्कुल आकर्षण-आवाज। बी भाषा भी तो जानकर मैं जो भी कितते होंगे अपना का बेदार नहीं है। ही...ही!...ही!...ही! कवर उत्तरादुल का जीवंत नमूना था।

“हीं बैठा।” मैं तुम्हें लेन-लेकर जाएगा जाएगा।

रानी की आर्थ भी मौलन ईशानी को जाएगा।” बैठे से लाने आलीवाला का उत्तरादुल था।

पिताजी के अगले साल बीते यह बात। दरअसल यह बाहर सिलेंट ही हो रहा। यकफाक तभी अपनी ओर देखने लगे।
बीते दिन

इन बातों का सच्चाई वे अक्सर पूछते थे और खुशी के साथ बोलते थे, लोगों के बाएँ हाथ में शिक्षित जानकारी।

उन्होंने सच्चाई वहीं पूछते थे, जब वे हर समय सारे लोगों के सामने थे।

जब वे हर समय सारे लोगों के सामने थे, तब वे देखते थे कि किसी ने क्या पूछा था।

बहुत देर तक वे अक्सर पूछते थे और ठीक करते थे।

बहुत देर तक वे अक्सर पूछते थे और ठीक करते थे।

अक्सर पूछते थे और ठीक करते थे।

कहा गया।
चारों तरफ अंधेरा फिर गया था। पूरी ही चुंबक का वांछर-सा छा गया था। शायद कोई तुफान-सा आ गया था उस दिन, जो उसकी जिंदगी में भी उल्लक्षित था। वे भी भागकर उन दोनों कर्मचारी में चुस गए थे, जिससे माता अपने परिवार के साथ रहता था। वहीं जिसके जगह मिली, सब भी दुबक गए। वह भी कमरे में पड़ी छत्ठिया पर बैठ गई।

बच्चों के सम्प्रदाय में वह ऐसे सिंचलित चातरी आई कि उसे समय का ध्यान ही नहीं रहा। उसने घर में देखा, अपनी दिन के तीन बज रहे थे।

देखा जाए तो माता सच ही कह रहा था कि आज के बच्चों को यह हरियाली, प्रकृति कहाँ हुमायूं है। वे तो कुछमता की जोर भाग ता है और वह ही उनके नन को माता है, जबकि लगती है। इससे होतीं हरियाली और पालों में हर समय भीड़-भाड़ मिल जाती है, पहुंच एक बार को बाँध-बच्चीयों तो खाली लगे मिल जाते।

पहले तो जैसे ही दोस्तों का साथ मिलता, सब निकल पड़े थे। आतंकवाद के पक्षों में रिसालक गये, माता करते, हरियाली के पौधे। पुलिस के दोस्त ने अपने पान से उनकी कोशिश नहीं की कि, न जाने कैसे सब दुख बदल गया था।

आज केवल दस सालों के बाद किसी हौर से बच्चों की भांगी वही आई थी।

इन सालों में यह फिर कुछ बदल गया, या फिर यह खुद ही बदल गई, या उसके मन में ही चुंबक बनाना गया था, जो उसे यह एक समय से शायद खुद लग रही थी। माता पत्नियों की कलरव ध्यान ही आ रही थी। वह भी उसने नहीं, जितनी पहले होती थी।

पहले तो हर दाय और हर शायर पद्मिनी का जगमग लगा रहता था। कोई वौना, चौंदी-नी। न जाने किसी कोनोमरक और मूँगी आजादों में पूरा बच्चा मूंगता रहता है। कुचले के शोर-चर्चे के बीच माता का दंड के लिए जोरदार हुए दौड़कर आता और उन बच्चों का खिलखिलाता हुए दूर भाग जाता।

उसे यह दिन कभी नहीं चुनौती, जब वह इस बच्चे में आई थी। वह शायद आसीन बार ही था, उसके बाद तो कभी माता ही नहीं रहता। उस दिन से कोई के समी में देखता था।

लगभग धीरे-धीरे दोस्तों का समूह था, जिसकी कमी भी शामिल था, उसके बालक का एक सुंदर, जो सीमित था। माता की बालक में दंडना था और माता उसकी बचपन की सहजता... वह होने का समय आया था। माता ने उसका कलम के सब पर परिवर्तन कराना था—“यह है मेरा भाई जैसा दोस्त कलम!”

जब उसने उसकी तरफ देखा, तो कलम ने मुखरकर अपना हाथ आगे बढ़ा दिया था। वह भी जैसे ही देखने मिला को और धीरे-धीरे उसने माता के भर दिया था, यह कहा था—“ठहरो, मिलाओ हाथ!”

इस सुन वह संकोचमयं चंद किया पीछे हट गई, परंतु उसका मन वह यह तो दस कदम आगे बढ़ गया था। अभी उन तरफ माता की भांगी शुरु भी नहीं हो पाई सी कि भक्तवत और हो गई।

चारों तरफ अंधेरा फिर गया था। धूल ही धूल का बच्चर-सा छा गया था। शायद कोई पूरानी-सा आ गया था उस दिन, जो उसकी जिंदगी में भी उल्लक्षित था। वे भी भागकर उन दोनों कर्मचारी में पुस्त गए, जिसमें माता अपने परिवार के साथ रहता था। नहीं जिसके जगह मिली, सब भी दुबक गए। वह भी कमरे में पड़ी हड़ताल पर बैठ गई।

उसका शारीरिक स्थान से कौनों लगा था और पूंछ, धूल से कैसीता और करिश्मा लग रहा था। इसी तरह कैसे धीरे-धीरे हर कर निकल गया, उसे बाद ही नहीं चला, परंतु अभी भी रौंदने का नाम नहीं रहा है।

पुस्तक संस्करण 17 जुलाई – अगस्त 2016
भी। बल्कि उसकी तीव्रता का झलक तो बंद करने में बैठकर भी तो रहा था। उसे कहने के लिए न कहती भी भी और उसका नाम भी नहीं रहा था। और उसकी कहानी के लिए कोई नहीं कहता था।

उसे हर भी लगने लगा था। अगर उसे भी रहा तो वह भी कहते पहुँचते थे। उसे बारे खासियाँ उसे लेकर परेशान हो रहे होंगे। आज तो वह पर बसाकर भी नहीं आया था।

“क्या हुआ, ठंड लग रही है?”
“है!” उससे युद्ध से जोगाया हुआ नज़र आया।

अब वह उस आकाश को पहचानने की कोशिश करने लगी। वह कमल ही था। कमल ने उससे कहा, “युद्ध कहाँ लग रहा है?” और चाह उठाकर उसे ठहरा दी थी।

वह भी कहने के लिए कहते थे। उसे में कमल ने अपने हाथ आगे बढ़ाकर उसके करीं हाथ करने लगा था। साइट के आधे से आई ही पहले गया हुआ था। अब कफ़ सही होने पर है आएगी, क्याक ओँकी में लाल के तार दूर गए होंगे।

वह कमल के लाल फिर-फिर की बाहर आ गई थी। दूर-दूर पर हलफ-हलफ की तीसरी दिख रही थी। उसकी स्वरंग बहुत तो तक पड़ी। तभी भी तो लगा। और जैसे गए, पता नहीं न चला। वह पहुँचकर उसने रातक को ली।

कमल बाहर से ही छोड़कर चला गया था। उसे तब लगा उसकी फिरता कर रहे थे। वह तीस अपने कमर में आ गई थी।

भी चाह लेकर कमर में आई, “हुए कहाँ भी, इतने परंपरा ओँकी-घुलन में, हम सब कितने परेशान होंगे।”

“भी, हम सभी अलग में ही रह गए थे। जैसे ही ओँकी छोड़ी गई, तो बाहर आ गए हैं।”

“बसो अब चाह तो हो, कौन दूर-दूर है? चाह उठाकर आने नीचे आ जाना!”

वह चाह तीसकर कंपत ओँकर ले लेंगी। बाहर जाने भी तो भी यहाँ चले चले रही थी।

लेकिन अब वह हाथाँ में नहीं रहा था। उससे कमल के कमर में कुछ सरोगरेशनी-सी कर रहे ही थे। और ओँकी में कमल की छाव नहीं रही थी। कितना अचानक है यह, जैसे तो एक कंपर में तीन घटी एक सबक गुजारने के बाद भी। एक अन्य कंपर से जाना शुरू है।

उस कमर में एक मीठी-सी कमर जाने उसी कमल के प्रति।

यह वह सौंपी हुए रख के जाने नए सबक को ओँकी लग गई और वह शीघ्र हो। उसने में भी वही रह गई दिख रहा था, जो उसके मंत्र में था। अगर दिन जब वह जलती पहुँच गई, तो उसे तब कुछ नया बदला-बदला नहीं रहा था।

पहले ओँकी कुछ भी नहीं था।

सब है, हमें देखने का नहीं है। तब करता है, हमें देखने का नहीं है।

तभी उठे सामाने से कमल आता दिखा। वह ब्लू जोर और बाहर का भर्ती त्यों था,
काश! वह बुध लेंशु, उसकी बात मान लें, 
एक बार मिल ही आती या फिर पापा को ही बता देती?
कुछ तो विशेष करते। 
उसने उस दिन तहले ही सारे हवायार भाग दिये थे 
और पापा की बात का मान रखते हुए उसने कमल की छोटी ज़िल्ल के विवाह कर 
उसका पर बता दिया था।
इसने तरस गुजरने से बाद भी 
वह न उसे भूल सकी थी 
और न ही उसके 

अपने छोटे बुंदे क्यों नहीं रही?

उसने हक्का-सा मुकटा पर दिया।

"शायद तुम्हारा बुधसे बोलने का मन नहीं है, मैं जा रहा हूँ।"

"नहीं, नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है।"
उसे जाते ख़ाब वह एकदम से बोल पड़ी थी।

"तो फिर क्या बात है?"

"क्या कहूँ?",

"कुछ भी, जो तुम्हारा मन करे!"

"शी, क्या बात करहे?", वह संकोच- 
वज़ बोली।

"जो मैं पूरा रखा हूँ या जो तुम्हारे मन में है।"

"क्या?",

"तो तुम्हारे कुछ सुना ही नहीं?",

वह सुन ही कह पाई थी। वह तो 
उसके बड़ी जाने पर ही ही कही खड़ी थी।

अब वह दोनों अवसर साथ दिखाये थे। 
कॉलेज में तो यह बात फैल गुड़ी की थी। न जाने कब झड़क, रहते और गलियों से होते 
हुए उसके पर तक भी पहुँच गई थी।

जब वह बातें पापा के कहनों तक 
पहुँचीं तो उस दिन उसके पापा ने पहली बार 
पापा बिखार उन्हे सबकाले हुए बुध था, "मैं 
यह सब क्या पूरा रहा हूँ?"

वह पापा से कुछ बोलती, उसने पहले 
हो दे पूछे, "और तुम क्या चाहती हो?
अगर बात हृदंत लेबा होता है। केवल पापा, 
मोहब्बत से जिंदगी को गाड़ी नहीं चलाती!"

"लेकिन आप आप बात कहकर वह चले गए। वह क्या सोचेंगी? उसने उस पर तहले 
ही सोच रहा था। पर वह उस दिन कुछ कह 
नहीं सकी थी और उसकी चुप को पापा ने 
उसकी शादी के लिए "हो" समझ लिया था।
उसका रिश्ता एक इंग्लीशी लड़के से तथा 
कर दिया गया था। कोई भी तो प्रतीरियम न 
कर पाया था।

इनके उसकी बड़ी बातें पण किसी ने 
भर पता नहीं था।

एक पहले के अंदर ही शादी-वायर निपटा दिया गया था। उसके अभ्यास भी 
नहीं पूरा हो पाए थे। याद ने तो शादी करके 
अपनी दिवंगतियों से पहले घाय लिया था।

शादी से दो दिन पहले कमल का एक 
मैल उसे मिला था।

"युग एक बार उसी पार्थ में आ जाओ, 
सिरों दो मिल देंगे के लिए।"

लेकिन शादी की वर्तमा से निकलकर 
वह जा ही न सकी थी। चारों ओर रिलेशन, 
मेहमानों और परिवार वालों का घाया जो 
था। वह मामले से विध आए जा गई थी, 
एकदम से नए परिवेश में, पुराना सब 
कुछ चुराकर, लेकिन वह कभी नहीं था। उसने भोग था, गहसूल किया था 
और जो विवस्त्र पवित्र था।

तो वह उसका मन न रख 
पाई। उसके पार को उसने उसने 
मात्र मजबूर समझा था।

जब एक देर देर ले 
कॉलेज में गई थी, तो उसे यह 
वाद कि उसकी शादी बाद विवाह 
ही कमल ने नींद की गोलियों का 
ती थी। वह तो डर ही गई थी। वह 
उसके बाद शादी का जाना ले ही 
संगीत में घूम रहा था। पापा.

काश! वह बुध लेंशु, उसकी बात मान 
लें, एक बार मिल ही आती या फिर पापा 
को ही बता देती?
कुछ तो विशेष करते। 
उसने तो पहले ही सारे हवायार भाग दिये थे 
और पापा की बात का मान रखते हुए उसने 
कमल की छोटी ज़िल्ल के विवाह कर 
उसका पर बता दिया था।
इन्हें बस गुजरने के बाद भी 
वह न उसे भूल सकी थी 
और न ही उसके 

धुए था। इन कहानियों में उसका विशेष कितना 
गिनता हुआ लग रहा था। हलकी-सी दाढ़ी 
उसके बड़े पर भूल सब रही थी।

कमल ने उसके करीब आकर 
उसने पूछा, "लारन में क्या देखा था?
कहना या देखना या कबड़ा था?",

"हां!" उसने सशयत- 
शा उत्तर दिया।

"तुम युं, ही दर रही थी।"

"हां।"

"तुम युं, ही दर रही थी।"

"हां।"

"तुम युं, ही दर रही थी।"

"हां।"

"तुम युं, ही दर रही थी।"

"हां।"

"तुम युं, ही दर रही थी।"

"हां।"
आज वह उन पैचों की सहायता और भूमि को टॉपलिंग भूमि रही थी। अन्यदेश हीं से उसका कोई सुगम मिला नहीं, जिसे उसने अपनी गतिविधि से ही खो दिया था। वह इस तरह कुछ तूर्ण तैयार करने की तलाश करने के लिए रोगित हो उठा।

“क्या नहीं?”

“तो इस तरह पैड-पीचों को साहलाने का मतलब?”

“जब देख देख हमें इतनी शारीरिक और हृदयाचार जितनी ही न हो, तो मन यहाँ आकर टोपलिंग हो उठा!”

“एक बार बताओ!”

“हॉ, हॉ, हॉ!”

“आपना कुछ दिनों पहले एक व्यक्ति यहाँ आया था, वह भी कुछ होता-होते दिखा था, इस पैड-पीचों के बीच!”

“जितना कहना था?”

“मैं जानता हूँ कि, हॉ! विदेश से आये थे।”

फिर कुछ याद करता हुआ बोला, “हॉ, आपने मुझे भी ईसाई बनाया है।”

“उस पर कोई नाम तो होगा?”

मासी विचारमयन मुख में आग में जाते वाद करने ही जोर देते, किन्तु सर्वेसंख्या एक बोली, “आप आपका ‘कमल’ नाम था, ‘कमल सुगमा’!”

“कमल? कमल? वह चौंकते हुए बोली।”

“आप जानती हैं उन्हें?”

“कोई जवाब न देकर जड़ता माली से पुछते लगी, “क्या आप नाम है प्राप्त कर सकते है?”

“हॉ, एक बच्ची यही नागरिक, करीब दो साल की होगी। कुछ विश्वसनीय था, विश्वसनीय दो झंझ टोस्स टोस्स भी, में मुख भी, किन्तु पत्ती पत्ती।”

“क्या आप जानती हैं उन्हें?”

“आप जानती हैं उन्हें?”

शुल्क मेंनें के प्रारंभ क्रमांक फोन अनुदान जनरल नहीं आया था।

‘पुस्तक संस्कृति’ के वार्षिक प्रायोगिक बने

तैराकी पत्रिका का वार्षिक सदस्यता शुल्क 125/- रु. है। पत्रिका का सदस्यता शुल्क मेंनें के लिए बैंक का विवरण निम्नलिखित है:

CANARA BANK, Branch: Vasant Kunj, New Delhi 110070.
A/C No.: 31591010003159

इसके अलावा नेतनाल बुक ट्रस्ट, इंडिया के पास में देय चेक, इनप्रेंट या धानादेह भी मेंजे जा सकता है।

शुल्क मेंनें के प्रारंभ क्रमांक फोन अनुदान जनरल नहीं आया था।
काले मेघा...

तिर वर्ष मई-जून में पत्ती तपती है, तो वर्षा आती है। बारिश की राहत की प्रतीका रहती है, यदि वह भूघर फेर गई तो आकाश में मैं नियंत्रण काले-कटरारे बादल निरंक लगते हैं। यह वर्षा दो बुरुंगियाँ निंदन के भीतर हो। महेंद्र और सुनील। महेंद्र मुल्ला:१०५५ गाँव (महाराष्ट्र) के हैं और सुनील आमरा (उत्तर प्रदेश) के।

दोनों संयोगवाद उत्तर दिशा की एक साथ-साथी शांत कियोंमी ही आ निःशक्त हैं। 

दोनों के बेटे यहाँ बांधते हैं। 

हूड़ने में इसी इच्छा हाना था। प्रातः पाक में जूमा हुए। 

काले काफ़्यकती हैं और सुनील का झुकाव राजनीति की ओर रहा है। महेंद्र ने एक दिन डेंग पर बैठकर मित्र को मध्ययुग के कवि लुसीदास के ‘रामचरितमानस’ से वर्ण-वर्ण की चौपाइयों सत्य सुनाई।

यह वर्षा न हो जरा नहीं व जरा नहीं। आदि। यह मूँग इस वर्ण में उन्होंने लिया है। आगे बढ़ते, लुसीदा के वर्ण का वर्ण करते हुए 

उसके मध्यम से मध्यम को निरंतर शिक्षा देने पर ध्यान रखा है।

आधुनिक पुरुष में कवि ने प्रकृति का स्वतंत्र रूप थे वर्णन किया है। उदाहरण 

स्वतंत्र उन्होंने कवि ‘रहस्य का सम्बन्ध-वर्णन की वे पतलियों सुनाई।

‘ते रायल जिस सत्रों में खान की वर्ण हो, खेतों में बसाते जो हों, पानिक, मोटी,
2. अपने दिन मित्र मिले। सुनिल ने सन 1950 का वर्ष विदेशीक अनुभव सुनाया। अनुभव के बाद, यह भारतीयों की तात्पर्यता एक अभिनय-दिव्य कि था। विदेश चाहिए था: भारत में यह वर्तमान शुरू हुई। भारतीय गर्भन वेड़े वे कारण वर्तमान की बड़ी अनुभुति से प्रभावित थे। परिचय का वाही ही हो जाता रहा। तभी ने पुंजी दर्शन से उसका निजी मित्र किया। अभी यह वसूली व्यवस्था देखा तो न कि दिल्ली में नेम्ना में पानी वांग गया।

दिल्ली वाले बाप का प्रयोग जैसे-सैले नहीं गई और वहाँ बाप मुझे बताता था कि यह है समापन का सामान लिया।

बाप का शराब करते हुए, जेल में बोरियों की दुलाई के बनकणे रोगों का बोकरा उभय। व्यापारी बाप का पीड़ा से जवाब का अर्थ अनुभव की।

कुछ तो होना ही चाहिए। सुनिल आगरा क्षेत्र में युगाल आया था, मनोरंज था। उसी वही दो शहर के रूप में आया था और जानता करने और राहत कार्य पर दृढ़ता के आदेश हुआ।
परिस्थिति की कठिनाई और सुकुम मजदूरों की मनमानी। रेत सुस्का की गोत्र गूँह मैलकर कहीं से कहीं जा पहुँचे। गोदामों में रहे मरे, मरे, मरे, इत्यादि आदि की बहुमूल्य बोरियों को उठाकर सुरूवात स्वाग पर पहुँचाने का प्रति बोरी का पात्र तीस-बहसां रुपये का हो गया। व्यापारी मरे, कसा न करते। उनसे मात्रा ठेके। जमाने को कोसार और बूट के घाट बोरियों दुलबाई।

सुपीरियर पड़ों को खापने का मसाला मिला। बाढ़ की तवाद के सनातन तक कितने से फांसी रहे थे। अब उनकी चार बनी हुई, भेंट गांव में बोरियों के दुलबाई के नए-नये रेतों का बोरा खा। व्यापारी ग्राम की पीड़ा से सरकार का आसन हिला। राजपत्री लक्ष्मणदीन में गैंबे यह प्रदेश के सुभाषमणी जी ने बिखरे पिंचा अनुमति को। कुछ तो होगा ही चाहिए। सुपीरियर आमरा क्षेत्र से चुकाकर आया था, मजी था। उसे यहाँ का दौरा करते और राहत कर्म पर पुटड़े रहने का बाज़ार हुआ।

उससमा तीसरा पहाड़, मुहुला आकाश, चाँदो और गतने पानी के रेतो। सुनील लालियों के साग, जैसे-तैसे यमुना पुल के पास पहुँचा। यह देखना बहारत था, कितनी जबों का प्रांभ है और चाहत का क्रम पूरा चल रहा है। सामने नज़ारा यह आया : फेंक उपलाठी, गैलती यमुना, जाती टोरकर दूर-दूर तक फैल गई है। जायो रूको, दफ दफ फिर हमें उसे रोकने का। रोकना तो भाग, पहले बघो उसकी बड़ी बंदरे से, चाँदों और वेंगे से उड़ी-फिटाए पानी के घासों पर धर्दे। धर्दे तलकर रहे हैं, हटो, बढ़ने दो।

बारावर, जो कोई नाच में आया। ऐसा पड़ेगी, कोई हार पुराने बाला नहीं मिलेगा।

बौँ, सुपीरियर ने देखा, नदी किनारे की अब नाम थी। राहत का क्रम भी अब बांधकर बत्ते रहो कर रहे थे। उसके दोहरे हूँपते ही जिली काँपते अब नहीं। हर बाज़ार का क्रम खड़े, उफर दिलाया जाया। असामान के बालकांल उसके आसमा की सुनील पा}

“बौँ-बौँ पड़े।” बाहरी भीड़ जुड़ गई। नरें लगे लगे—‘सुनील उपवास, जिवंबाद।’ ‘उपवास जी, जिवंबाद।’ एक बोरी-चाकका नेतानुमा अन्य आपु का ब्याप्ति बिखरे रक्ष का। उसका सहानुभूता पता जाने मोड़कर उंचा किया, हर्ष भवन, अगस्तिदी और भरी से दोस्तारा जा रहा था—‘उपवास जी, जिवंबाद।’ अर्थात जीता मानव-मुनुक जीवन भी बिखरे रहे वास जीवन भी नाते जाने में वहीं जुड़े, उन्हें जोड़ न दो। बो वह आवाम आंखों दो—‘उपवास जी, जिवंबाद-जिवंबाद।’

सुपीरियर नारे के इतने रेत से यमुना का मन में हिरात गया। उसके नाम सुनील नुमार परदा है। ये उपवास जी कहाँ से आ बुझे? जाति का युक्त अब वचन में,
अनजाने शैक्ष में, उसने नाम से बीच लिया था। जब वह इसका प्रयोग न करता है, न करना चाहता है, वे बताते आत्मी कहते हैं जो मुझे पुराना देखा ताकि और निर्देश पर लाइन-लाइन उठाते रहे हैं। वह मुझे महत्व मनुष्य के रूप में खुद को अपने करते हैं।

इसी कहीं ज्यादा मतदान उसे लगा रहा था, नामों का आक्रमण जो कुछ नाम का नाम लेना था। जब यहाँ का आक्रमण न स्वीकार नहीं करता है। एक ज्यादा विचित्र रूप में यह आई है, जब तक कि बेहतर रूप से इस उपाधि ने राय से बाहर मान्यता रखते हैं।

चिड़ा जोड़कर उसने निश्चय में रूढ़ की। तत्कालीन उन्होंने उसके स्वागत में जो कुछ कहा, वह भाषण पर बढ़कर, कुछ एक रीति, जो प्रभाव के लिए कहने में किसी भी बड़ी आदर्शता पर बने से विचारकों आ जाता है।

भाषण में, फक्त सामान्य अंदाज में एक प्रश्न का उल्लेख हुआ। हाल में सूनिल का विज्ञान और सृजनात्मक आयाम। विज्ञान में बताया गया, उनका परिशीलन थीं। जो सबसे विवरण से अलग है, उन्होंने वस्तु न नाम निर्देश की एक सबसे स्वीकृति की। ब्रिटिश सत्ता की तालीमें, अदालत के जेल पर जेल गया।

सुनिल के पर तीन ही शब्द गुलाम रहे थे—नेता, स्वतंत्रता।

यह कारण सामान्य होना, होना छोटा रहा। किशोरीरघु ने देखा-रेख करते वाले ही सरकारी अधिकारी भी इस समय गंगा महादेव के आलम में काम करते हुए है। तत्कालीन वे गूही करते हैं, है कभी को कीर्ति वेद के मंड में पर जा चढ़े। नया थिलाली जान पहले दे, उद्योग अंदरों जैसे, शांति अंदरों। बालों हिंदी में। मिलिन्टर राय के बाइक विज्ञान से जो जोड़ा और प्लेट उन्हें प्राप्त हुई है और उनके सुनिल को, उनकी अभिव्यवहार के उन्होंने कहा। उन्होंने उसे आत्मी विज्ञान के रिकार्ड में शामिल किया, फिर स्वातंत्र्य एमरजेंस पर लाया जाता और इस सबसे अधिक, अंदरों मिलिन्टर उपाधियों के टेलीज़न और तरंगदाता को दिखाया किया। उनके वेद लगने ही हो जाते जबकि जहाँ है। मृग बड़ी रही। वह गुलाम लगे, देखने-देखने मंड में सूनिल महादेव की एक पल्ला लेने में जुटे।

सूनिला नेता ने धारकों की कहने के लिए मंड लगाने की आदत की, आशीर्वाद क्षण्य। वक्रता क्षेत्र। वह बाह-बाहर की सेवा करने लगाया है, वह मानना चाहिए, सहयोग करने आया है, निश्चय का अवभ्रमण उसे करता है, वनस्पति केन्द्र। इसमें नेताओं ने प्रताप दोहराया कि गाना मनुष्य उपाधियों जो उन सबकों का चयन करने की प्रयास है। तुलसी महादेव में पढ़ यह कि किसा कथा जाए। इसने भाषण हो पुकार, बैद्य ले और उनका नाम उठा है। इस अवसर पर वह चुप रहता है, तो बैद्य पर बर्म अनुभव पड़ा।

सूनिल का बाहर होगा। किसी भी बेंगल के पर उपलब्धि होना था। गले में माता भीरी है।

उसने लंबे के, अपने आलम का जीवन बताया। बाड़ के विनाश-करार पर दुख ज्ञान किया। कर्मिन सुराख से सुनिल ने खोज रहा कहा किया जाए तथा किसी ने बसवान बनने में लोक के जिनाही वाला है, भाग के माता सामाजिक नहीं कर जाए। इसके बाद में गौड़ा पाइया में सूनिल ने जलाता।

गौड़ा है, मंडी महादेव बाड़-सेवा में अपाराजेय कार्य करने वालों की स्वयं पुरस्कार विवरण कर्तन के। इसमें एक श्रेणी से आत्मी आई, पुरस्कार विज्ञानों की सुविधा बनाने में धारकी है, उसमें अनुमोदनस्तर है। भाई-भाईजादा नहीं चलाव। अरोप का प्रतिबंध हुआ। प्रतिबंध का प्रतिबंध हुआ।

देख से इसकी दृष्टि ही, तुलसी ने बीसे और कही। मंडी बाड़ की तार्किक जैसी है, पुरस्कार केन्द्र? उसे जैसे-तीस बीच-बाहर किया।

आये वे हरि भजन को, और लोगे करण।

जब तक कुछ काम की बात हो, सूनिला नेता में पुनः अवधारित हुए।

उन्होंने मंडी महादेव के आलम और भाषण के उपरांत में अपना विचित्र धारक भाषण आरंभ किया। सूनिल को सुनता नहीं, करे कथा। बौद्धिक हो। जी में आया, इस नेता को मुख्य के वक्त ते दे, और जुड़े, तुलसी भी बाड़ में छाली लगा दे।
बुदेलखंड की माटी कला की लोक परंपरा

‘मा’ दी के कुमार से धू ध्वनि सुनाया नाखून—इस हिना ऐसा एयरा में सोंगों की तोप ’ जो तर माटी में मिल जाए।

इस प्रकार की अनेक काश्मीरियों, दोहा, कहावतें या जो मुख्य विषय समाज में मानसंहरण एवं जागृति हेतु कहीं, तृप्त, स्त्री, लिखी, छपी जाती हैं उनका जागरण मनुष्य के मूल्यांकन जीवन को दर्शाना भी होता है।

परंतु पूरे जीवन का संगीत निर्देशक की शरीर में ही भावना तथा इतिहास, जो मान्यता, भाषा, तथा क्रियाकलाप के अवधारणाओं ने रामचरितमानस में सिखा है—‘स्वति, कर, पाक, मगन समीक्षा, खुद रचित यह अवधारणाओं’।

देखें: यह पूरा तत्त्व के आधार पर जीव की संरचना है और इन्हीं में उसका सिद्धांत होना तय है। इसी सब को स्नेही कर हमें इस सभी तत्त्वों को सरोकार करना चाहिए। हमारे जीवन में प्रकृति द्वारा प्रस्तुत तत्त्वों का ही महत्व है। जल, बायु, मिट्र, पहाड़, मगन, पेड़, पौधे तथा द्रव जीवन के में लो।

हमारे इसी तत्त्वों को जाना और एप्ले जीवन को इनके पास रखा।

हमारे यहों की एक लोक परंपरा रही है कि जब मैं एप्ले को माटी का स्वर्ण करने हेतु उसे नम अवस्था में पूजा पर हिताता जाता है।

श्रीमद्भगवत मूरण में भूमा जोशी द्वारा भयावह क्रम को जीवन पर हिताते को क्रिया आती है।

अलग अवस्था में वह कृत्त द्वारा हमें गाय बास्त का व्यक्त करते है। अलग शाल को जीवन में पर हिताते को बैंडलक्षण परंपरा शरीर के सूक्ष्म से सूक्ष्म अंग तत्त्व को मिट्टी के उद्वेद्य तत्त्वों से स्वयं करता है।

अलग रंग का जाता है कि प्रामीण क्षेत्रों में रहन-साथ के तर पर ध्यान नहीं दिया जाता। शहरों की अपेक्षा प्रामीण क्षेत्र
हमारे यहाँ की एक लोक परंपरा रही है कि जन्म हिस्से से गहरी का स्थर करने हेतु उसे नन्द अवसर व मुच्छि से हिस्से रखने का जरूरत है। जीवनभर सातिम, पुराण में वैष्णव तथा ब्राह्मण कृत्तिका को जगीनन्दन पर दिनांकन की कथा आती है। उसी अवसर में वह कांति द्वारा भजन का बच्चा बनता है।

को मिट्टी से उत्पन्न बच्चों, गौड़ में बालू, दही, मक्खन, मद, महेंद्र खाने वाले से खस्ता एवं बलशाली हो सकता है। अगर उसे तर नहीं है तो फिर उस तानाप वटुवी को उपेक्षित करना प्रारंभ हो सकता है। प्राणी के छोटे विकरित सरें और शरीर परिवेश के बालकों में फर्क महसूस किया जा सकता है। प्राणी के बालक मिट्टी से जुड़ा हुआ होता है। खेत का, मृदुता है और खेत-खेल में मिट्टी भी खाली है। जब वह एक बच्चा के रूप में शारीरिक रूप से ज्ञात होता है तब खेत-खिलाने से जुड़ा होता है। ऐसे व नींद पर खराब बच्चा है जिन्हें विद्यार्थी एवं विद्युन्यधि होता है जब यह नन्दी की हमेशा में मानसनुम्मे भिंत होती है।

कला की दृष्टि से बच्चा को मिट्टी से निर्मित जीनोपोथाय वस्त्रों प्रार्थना का तरी है हमारे उपर्युक्त में रहता है। इतिहास साहित्य में दुलख भाव नाट्य की समाप्ति का आधार पर मिट्टी से भरी वस्त्र द्वारा बालीयों व बालीयों के अनुभूत प्रार्थना प्रार्थना की गई मिट्टी की है, विषुवालय व नामकों नगरीय व बालीयों के बच्चों की इंजीनियरिंग का अनुभूत प्रार्थना रहता है। कल्याण के राज्य में बुधु और मिट्टी का विश्वास अवश्य है। वहाँ वालीयों के बच्चों को मिट्टी से निर्मित वस्त्र एवं अज्ञात ही मिटती है। बुधु: पुराण में इतिहास और हमारी प्राचीन परंपरा में यह सिद्ध होता है कि धार्मिक सांस्कृतिक परंपराओं से पूरा मिट्टी ही हमारी महत्वपूर्ण सांस्कृतिक विवृति भरता है। यहीं साध्विक सृष्टिकोण से मिट्टी ने साधु वाणिज्य जाति में बनती हुई अज्ञात हो गई सौदेज और मिट्टी के बच्चों के होते हैं। मिट्टी के बाल में बनाई गई वस्त्र मिट्टी के बाल में पहुँची गई बालीयों का स्वरूप होता है। यहीं शारीरिक सृष्टि के लिए यह अधिक लक्षणरूप होती है। मजदूर का पानी ब्राह्मण द्वारा आज्ञातिक पुराण के प्रार्थना से कई रूप से बदल लोक साध्विक प्रार्थना का चारा है। पढ़ी में देखा पानी की भूमिका भी शारीरिक बाल ही यथार्थता फिल ही हो चढ़ने का रहता है। शिक्षा की तरह होती है। जब बच्चे नामा में प्रायोगिक रूप में प्रार्थनाओं से जुड़ा हुआ मानव जीवन होता है। यहीं ब्राह्मण के रूप में यह विशेष रूप से होता है। हमारे बाल में नन्दी की जीवन में खुशियाँ विषुवालय करते रहते है।  

पुराण में धार्मिक अनुष्ठान की प्रतिमा और संस्कृति का भवनाव एवं संस्कृति का साध्विक क्षेत्र है, जहाँ की प्रकृति में स्थित है, सुहू है, नाद है, वहीं ज्ञान के समाप्ति में बनाम बालक, शिक्षावादित बालक देखने को मिलता है। वहीं की बालक समाज परंपरा की, बच्चों की बालक, बच्चों की प्रार्थना की सुध-सुनिकार में मिट्टी का कला का जीत मूलभूत भिंत है। दुलख में चार कार्य की मिट्टी होती है। आवाजाही ओ, वहाँ कार्य को जीव में पुराण पुराण प्रार्थना की, यहाँ को कार्य, यहाँ की प्रार्थना की सुध-सुनिकार में मिट्टी का कला का जीत मूलभूत भिंत है।
मात्र समय, संस्कृति के प्रति लोगों के बने होते रहने के कारण लिखा बाहर उपचार प्रतीत हो रहा है।

पनन निर्माण
आदि काल के उपरांत मनुष्य में आई समय से यह गुस्साओं और जोशों से बाहर आकर रहने हेतु ज्ञान पर लाभ की खोज करने लगा और मनन निर्माण का स्वरूप उसके मन में रहा। मात्र के ‘पिंडों’ से कच्चा मकान बनाने की हुनुकल जसस समय की रही होगी। मिट्टी से मनन बनाने वाले ये मकान जो गर्मी-सादी आदि पैमाने से हुँकार रहते हैं, वहाँ हैं नैनी तीर्थों, सजावट में लगे महिलाओं ने लोक-लोकार्कों को ये जनम दिया। आज मनन प्रदेश के कई आवासीय क्षेत्रों में इस प्रकार के शीर्षक विषय लोक मनन कार्यक्रम में दिखते हैं।

दूरे-दूरे क्षेत्र में सहारियों, आदिवासियों के कच्चे मकान कलाकार और रंगालंक रचिक होते हैं। आज हम आधुनिक बनने की हृदें में वातावरण बुरा दूर होते जा रहे हैं। दूरे-दूरे क्षेत्र में कच्चे मकानों और बंजारे रंगों के मकानों में खरबश तीर्थ होती है अतः।

बनन निम्नालय के कला
को शोभावत में या आने वाले दिनों में शारीरिक हो रहा जाँचे हैं। समय के आधार पर बनाए गए मकान, हवेशी, नहीं, रातियों की बातकूल समस्त क्षेत्र में पहचान दिलाने वालों होती है। यहाँ पर भारी के द्वारा किया गया प्रलयार या उरी से कोई नक्सली देखते ही बनती है। आज मनन निर्माण सीमित, नकसी, टाइट गांव से हो रहे हैं जो शीतलता की अंधविद्या अनुपस्थित काव्यावरण नहीं देते।

वर्तमान निर्माण की भूमिका
भारत में वर्तमान निर्माण का धीर आगा, तीर्थ, मठ, महल, कौशी, तथा तक कि चाँदी-सोने के बारों का भी ऊंचा मिलता है परंतु स्थितियों में कभी भी न होगा यह है। लोगों के उन्नयन का धोखा नहीं, उनकी दुरंतता का वोडा रहता है। इन तरह केंद्रीय मिट्टी के बलन हो सकता है भौतिक उपकार में हिस्सा जाते थे। रातों में हृद, नील, विक्रेता, द्रोहिता, जो आदि मिट्टी से ही मिले होते थे। उन्हें केंद्रीय स्थल में रहते अगर प्रति दिबस पानी का स्वास्थ्य किया जाता था। मिट्टी के स्थान पर बनी रोती, हीरा, में बनी दहाड़-बाघी का स्वास्थ्य निर्माण होता रहा। स्वास्थ्य की पीड़ित से मिट्टी के बनने खाद्य पदार्थों में राष्ट्रीय केंद्रे की दूर करने की शक्ति रहते हैं। अन्य क्षेत्रों में भी अपने दूरे ‘पानी’, जीव में प्रवेश क्षैतिज, बनाने वाले हेतु भूमि मिट्टी का लोक (तीर्थ) का अन्य स्वास्थ्य होता था। जल समर्थन के लिए ‘बुद्ध’, वात, मंडल, फैल, लोक आदि वापस जाते थे। पर राष्ट्रीय के रखने हेतु मिट्टी के बनने का स्वास्थ्य किया जाता था। ‘पी’ के रहने हेतु ‘विद्रोही’, जिसमें रह शीर्षक अवकाश स्वास्थ्य और कभी केंद्रीय वाला बन जाता था। लोक हेतु ‘पानी’ भागी की ‘मूलुक/कुन्नु' रहती थी। गांव खींचे लगाने हेतु बनाए जाते थे। अन्य बर्तमानों में स्वास्थ्य, वेदनी, फैलाव, दल प्रवाह की हुई थी। रोज किसी निर्माण देखने के लिए व्याख्या की हुई थी।

वर्तमान निर्माण की सामयिकी व स्थापना
लोक साहित्यकार हरिकुमार ब्रजराय में हुई चर्चा साहित्य प्रजापति समागम में शामिल, चौकी और तीर्थकर वर्तमान निर्माण का व्याख्या करते हैं। इसके केंद्र के बनने में ग्रंथ, तीर्थ, मठ, रात, ग्रंथ सीमित, पूरा की लवलव का प्रयोग होता है। वर्तमान निर्माण में चक्का (पक्ष), चक्कर, चक्कर, धारा, धारा (साहित्य में बनी हुई) बेहोश, परमेश्वर (साहित्य में बनी हुई) का प्रयोग होता है। वर्तमान के हेतु अधिक अभाव, वापस तीर्थ प्रवाह होता है, वहाँ लोक, कीड़े, पुराण और रात्रि आदि से पालन जाते हैं।

क्षेत्र मिट्टी से बनने-वालों ने निर्माण
भूमिम लोक ग्रंथ पर प्रचार में वेकस तो प्रति दिबस दूर हुआ व बुरा तीर्थ-स्थलों है। पर अभाव माह में कार्मिक तक का प्रत्येक दिन उन्नयन से मरा रहता है। इन दिनों में होने वाले अनेक लोक विषयों में ‘सूज-
मकर संक्रांति के गड़बड़ी बुधपुर हिल-गुरु का महापर्व मकर संक्रांति पूजा-अर्चना, दुबकी त्याग और निखटित वाहे पर सजान करने का पर्यंत तो है है, तब ही बच्चों के लिए इससे सुहाग है क्योंकि जब तक उनके मस्तों में पतन उड़ने का सुझाव

मिटूडी के खिलाने बच्चों को हुड़ताल वाले ममता खिलाने उन्हें जानें व्यस्त रहने का कारण देने वाले उनकी उपजाती प्रौद्योगिकी के स्तर को भी बढ़ाता है।

मिटूडी के खिलाने बच्चों को हुड़ताल वाले ममता खिलाने उन्हें जानें व्यस्त रहने का कारण देने वाले उनकी उपजाती प्रौद्योगिकी के स्तर को भी बढ़ाता है।

प्रदान करते हैं। जानते हैं कि बच्चों के लिए यह एक बहुत अच्छा साधन है।

गोपालाध्यायी के कृप्या गोपालाध्यायी के कृप्या दिन भगवान कुण्डली दिन भगवान कुण्डली दिन भगवान कुण्डली दिन भगवान कुण्डली कहते हैं। इस अवसर पर गप्सें का दिन बुध पूरा कुण्ड, परन्तु कुण्डली, वारुंद्रल, शाक्रामन व गाम आदि दिनों के खिलाने का उपहार बनाने जाता है।

ये दिन का जीवन अवसर के लिए महत्वपूर्ण है। इस अवसर पर मृदू की गाड़ी का लीजिए तो सजावट-सजावट जाता जाता है।

गंगेश प्रतिष्ठा एवं नवत्युंग गंगेश प्रतिष्ठा एवं नवत्युंग गंगेश प्रतिष्ठा एवं नवत्युंग गंगेश प्रतिष्ठा एवं नवत्युंग गंगेश प्रतिष्ठा एवं नवत्युंग गंगेश प्रतिष्ठा एवं नवत्युंग
आजकल महाराष्ट्र की तरफ पर गोवा-नोकर्स में गणेश प्रतिमाएँ सजावट नाने लगी हैं। इसी प्रकार कस्टुमिंग गार्डलाय पर बंगला की परंपरा ने स्वभाव को अपनी आड़ में दर्ज करने की तात्क्षंबा दी है। हालांकि इन प्रतिमाओं के लिए बस्ती खुलने से पहले, शल्यकारों ने उन्हें काट दिया का लाभ करना। करीब चार माह तक इसका शिकार हो जाता है।

लोगों के दिलों में दर्शन में सैंकड़ों की परंपरा रही है, जो जीवन में भाग में चले, चले जाते रहते। लोगों ने सार्वजनिक स्थानों पर लुत्ता लगाते थे। यह परंपरा हमें रंग संभावना, रंग निर्माण बनाने का अभियांत्र का बदला या मानव अभियांत्र बदलने में सहायक थी, यह लोगों के लिए दर्शनीय था। इसलिए यह दर्शन दर्शन में भी देखा जाता था, उन लोग जिन्होंने यह दर्शन देखा था। चित्रकला लघू भारत सभ्यता ने इस ओर प्रवास किया है और इस तरह सीखी निर्माण कराने का जमानत दी है। सीधी में बनाने वाले छिल्लों, स्नान करती महिलाएँ, बैंड समुद्र, बैंड, मालू सहित विभिन्न प्रकार के परंपराओं की बयांन हो जाता है।

बनांगर प्राणपत्र ने कुछ ऐसे ही का दर्शन। उन्होंने जागरण, तोतक, तूफान, वांग, कुंड का निर्माण रंगदी से किया है। साथ ही जागरण रंगदी को प्राण धारण स्तंभ के विभिन्न प्रकार के दर्शनों का आवाजाह्वाल कर दिया है। लेकिन ये स्वयं उन्हें व्यापक बनाने का प्रयास कर चुके हैं।

मिट्टी का फ्रिग्ज
बांगान प्राणपत्र ने मिट्टी की शिला का निर्माण अंतर छोड़ देने के लिए फ्रिग्ज किया था। इसके विकास की जरूरत, ऐसे का विकास करने का प्रयास किया गया।

मिट्टी की मुगुराँग
dरेबिया केस के देवलाल एवं बहुलिका ऐतिहासिक प्रांग में मिट्टी की केस मुग्राँग आग उठाए। इतिहास करते सब वातावरण इतने तीव्रता सामंतों के कला का बनाते हैं। जिनपर सिविलिया ने जानना-प्राप्त में उपयोग करते थे।

मिट्टी का उपयोग
मिट्टी का उपयोग अनेक सामग्री एवं सामग्री हेतु बनाने के लिए शिलाओं का निर्माण की गई है। इसी प्रकार मिट्टी का उपयोग अनेक सामग्री एवं सामग्री हेतु बनाने के लिए शिलाओं का निर्माण की गई है।
सपना मांगलिक

शिक्षा : एम.ए., शी.एड.
(दिल्ली एक्सपोर्ट मेंजरिंग)

संस्थान : उप संसाधिका— आमना साहित्य
पत्रिका, स्वतंत्र लेखक

विषय : ढा ठूला एवं अन्य

सम्पादन : आमना साहित्य परिषद् द्वारा

'लोकरंग' लेखक ने जीवन के साथ साथ रूपांतरण के प्रतिनिधित्व के लिए किए अद्यावधी कार्यान्वयन के लिए लेखक ने रचित है।

लेखक ने नीर भरी ताज्जुब को बदलती
विन्दु नम का कोई कोना,
मेरा कमी न अपना होगा,
परिपूर्ण ठहर इतिहास यही,
उमड़ती थी कल निट आज चली

सम्पादक:
sapna8manglik@gmail.com
भजन पानी का बसा जाना भर नहीं है। यह जीवन की पूर्वार्द्ध है।

ज्योति के गान मूल और उजागर का सितारा अन्धकार है। शमसदेव में गाया भुक नहीं दिखाने का बदलाव है और जैसे ही जीवन में बदलती होती है, तभी यह शरीर गुर्गुं में होते हैं।

मंगल भाषा का शीर्ष बैसा ही महत्व है जैसे मंगल जीवन में प्रेम का, मानसून की बारिश बाहरी है कि इस लात किसान जान उम्राना, किसने भूखू क्यों चलती रही, किसने भूखें में अवधार चढ़ाया, किसने घरों में सुख बनाया। भूखें की अंदाज़, छोटी की पड़ा, पुराने कर्म की देवनारी, दूल्हा की किस्म, गीत के गिरियाँ रखें कंपनी की कारण स्वयं अनुभूत छोटे-बड़े काम पूरे होने या नहीं, कद मानसून के काल से तत्काल होता है। अतः मानसून, अंधकार कल लेकर आता है। उससे तक्षण रहे पानी के नीचे खाली तरंग रखते हुए तिलाल मान का गुर्गुं बदले से घर जाता है कि धान का तोपा लगाने के लिए इस भार शायद नहीं पड़ता है। तिलाल, खदीयाँ, तालाबों सहित घाटी के भीतर इतना पानी समाया कि आँखें और चन्द्र नीचे होंगे।

भाषा में पात्स छठ एवं संस्कृति

पात्स छठ में जन्म आसाने अपने मौलिक बोध बोधित करने के सतीत एवं तालाब की तारीख का तालाब कर उन्हें मानकानी प्रभाव करता है। वहाँ पात्स भाषा अपने प्रमुख कार्य का नहीं करने वाले नहीं हैं। लहारिया, तालाब, पौधे, संगीत पत्रिका में दो रंगों के बंधे ताल झड़ी होती है। राजस्थान या राजस्थानी संस्कृति के जुड़े लोगों के लिए तलाशी मिलकर कहते हैं।

उसके गीतों में तीज के नीचे पर गायक चाहे या यात्रा में बताते जाने और उनकी उपहारस्वर वाहिया देने की परंपरा भी इसी सांस्कृतिक विकास का हिस्सा है और जान भी है। तलाशी हो, ताल, पौधे, संगीत इत्यादि चाहे या यात्रा, अक्सर लोग के मन को छूटू भाती है। कहते हैं कि सुखा ने राजस्थान को यहाँ की शून्यकाल का कारण बनाई। वहाँ पुराने के जन-जीवन का ऑर्डर करते हैं।

उसके सपनों के राजकुमार का वर्णन और भावसागरी क्षणों और सुगंध के सुख की कला होते हैं। विविधता पुरुष राजस्थानी रियाज़ के अनुसार साभार अपने नायकों में है। जीवनी जीवनी वाचान में बूढ़े पर बांधरी सीमा लीटेची और जीवनी के अंदर स्वयं अदरकार भी शामिल होती है। इससे माता और उनके जज के नीचे यस्ते संस्कृति का वृद्धि किया।

उसके शरीर को नआत्रा का त्याग और भावसागरी क्षणों और सुगंध के सुख की कला होता है।
शामन में गाए जाने वाले राजस्थान के लोकगीत

शामन में धूले के ढोले लेती नारी मौली जुआन में जब करारी और मचार गायत्री है तो ताम का मायू ऐसे अथोंगाई लाते हैं। अभी वन जंगल में बाज़ार की फुसूर तल पर पड़ते ही मोर मूर्ती सुपुरुष विशाल कर जाने पड़े। फिर उसी तरह अपनी अतीती के अंगारों की पिंचड़ी राजस्थान की गुर्जरिया ढूले और गायन समाप्त है—

कहाना तो परी करे अनुभूति की बारे में जो बात

बात जब महाकाली की हो रही है तो ऐसी के प्रति विद्युत लोकस्तर ढूला और मायू का बिंदु आता स्वाभाविक। कहाना—'नाकाक ढूला नकल के नकल नकल का पुनर्जन्म बन कर उसे आकाश में ढूला व शालकावर के नाम से जाना जाता है, ढूला का विवाह बंधन में बांग्लूर (बीकानेर) से पूरा नामक दिखाने के साथ दूर राजा बिंदिया की पृथ्वी माधवी के साथ हुआ था। इस बाबा बालक ने अपने लोक का नाम आद्र के जन्म बिंदु के लिए दर्शाया। इसी तरह आद्र को ढूला के साथ अंगरे के लिए उपयोग किया गया। इसे बाबा की तरह आद्र की आद्री के तात्त्विक बालकों के लिए अपना बनाया गया। चक्कर में ढूला बालक की आद्री ने गुड़गुड़ बना दिया। दो सशक्त विद्वान तरह नकल के एक बालक दिखाने में कामयाब हो गया और तात्त्विक बालक के लिए उपयोग किया जाता है। उस तात्त्विक बालक का नाम विनोद के लोक का प्रति बिंदु पूर्व के समान गायन को संबंधित करता है। इसी तरह आद्र की आद्री के तरह उसे बालक ने बिंदु बनाया और दोस्त फिर उसे कम करने का मौका आया। इसी तरह आद्र की आद्री के तरह उसे बालक ने बिंदु बनाया और दोस्त फिर उसे मौका आया।

अमरावती जैसे आद्र की तीज के पहले नही गए तो यह प्रभाव ग्रस्तकाली की चमक देखते ही हो जिनके पर जाएगा। अमरावती भाषा के स्त्री का आद्र नही गया हो सकता। एक जीवन के बहुत समय पहले करने बालकों की हैं।

ढोला नवर तरियारी, धल पूरा लीलीलाहोर।

गीत में पूरा लीलीलाहोर का नाम डूढ़ता ही धला चोटी के तरह मनोलापन के हो जाते हैं। धलासी ने तो तलाश में धला लिया जाने का यदी साधना नही हो सकता। धला जब भी चूट की चमक देखते ही हो मौका आया। इसी तरह आद्र की आद्री के तात्त्विक बालकों के लिए उपयोग किया जाने का मौका आया।

मूलमान महानुस्मृति जब तरंग-तरंग होती है तो तरंग के भाव लोकगीतों के समर्थ में पूर्व पड़ते हैं। कहानी, आद्र, धला तैयार तीर्थ तक यहां पूर्व क्रत्तु में गाय जाते हैं। एक बालक देखिए—'हाली-हाली वनपुर है इसने देखवा खाना नही हो गा' में बालक के
रातें हुईं उदास

पूर्व से परिष्कर बढ़े, टेंकी ठणिनि बचार।
गदन-आग से तन जले, रितिहिंग फरई जुझार।

उभर विरह में जल रही, कुछ भी नहीं सुखव।
उबर पतीहा बाग में, जिसकी गीत सुनाय।

उस-नस सिराहू दीक्ती, फड़कौं जायद, करीं।
पिया निरह कब तक रही, पुष्प कर प्यास गोल।

हूंक हड़प में छलत है, जीत बने बोजू तैन।
जीवाती* से बात है, कठ जटकाते बैल।

उत-रात भर में जगू, विरहत आईं भीर।
निथुर बन आईं नहीं, तड़के निथ चकोर।

जैसे बटियों में कहँ, यह से जन मराल।
सिनंबर रहें बिखुता नित, मोराल बेकार।

दिखाता कामा है नहीं, नेव न आईं पाल।
दिन काटे कटता नहीं, रातें हुईं उदास।

संतोष कुमार सिंह

(९ जून, १९५१)

संक्षिप्त : इंडियन ऑयल महुरा रिसर्चरी से उत्कृष्ण अभियंता के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद स्वतंत्र लेखन।

प्रकाशित साहित्य : ग्रीख साहित्य की २० पुस्तकें तथा बाल साहित्य की १८ पुस्तकें प्रकाशित। साहित्यिक परिक्रमाओं पर अपने के लेखों का प्रकाशन, आकाशगंगा ब्रह्मचर्य संस्थान से लिखित के बांधकाम।

पुस्तक व हमना : तीन पुस्तकें पर उरद्भार तथा बाल साहित्यकार सरदारों से सम्पादन ज्ञान।

संपर्क : 9458882131

*जीवाती (उमर से नफसी कर्म की मूर्ति)
कुंडलियाँ

लगाएगा जमीं मे, प्रभु तुम्हारी किसान।
लगा रोपने खेत मे, आजादों के धार।
आजादों के धार, मायुर स्वर कोंसल बोले।
लिए प्रेम-सदन, नें सावन के होले।

कुंडलियाँ कविताओं, लगा वसंतों मनमाने।
मन मे भरे जमीं, सुपारी-फाल सावन।

सावन का रूढ़ देखकर, दत्तर ने ती तान।
धरती तुजकी सती, पहल हर्षत परिवार।
पहल हरेत परिवार, गोर ने सूर दिखाया।
मूजे सुमुहरू गीत, सुमीर गीत मे नृत्याना।

कुंडलियाँ कविताय, मातृ है यह अति पवन।
कितने प्रेत, धोखाड़, साथ मे लाया सावन।

कुंड-झम कुंड-झम जल गिरे, बरस रहा आँदव।
मेरे, तमार, कोकिला, गायें मिलकर छंद।
गायें मिलकर छंद, तमी की तिटी वदसी।
मूजे जालहाल, गीत, महार, गांजवासी।

कुंड-झम कविताय, चुमुर सह मन मे चम-झम।
चिंतों सबके गान, चिंतकती गानत झम-झम।

पानी बरसा गया हे, कुन्दर हुई निशाल।
नदियें, नालो, बुध, सर, सम ही मालामाल।
सम ही मालामाल, तृणी तीतरफा छाई।
महकी सोपी गंगा, धार की झुल ले आई।

कुंडलियाँ कविताय, लगा धरती इतरानी।
सहसा आई धार, हो गई पानी-पापी।

लेकर भर जल से घर, सर दौड़े खूब उड़ते।
मन चालक पागल हुआ, रह-से करता शेर।
रह-से करता शेर, प्रेम के राग सुना।
कार, दिशा की पीर, घिसे बदलती तक आये।

कुंडलियाँ कविताय, जमन का यह बुढ़ाई कर।
हो यह जीवन धर्म, पाये को दो पत में लेकर।
राजस्थानी कविताएँ
बारिश की प्रेमिन चित्रठिक्यः : चार कविताएँ

(एक)
धरा तपसी
पूरे प्रीत
तब निविर�ा आकाश पर टेंगे
बादल का कलेख

धरा को
आकाश के प्रेरण का परिवर्तन देती
सरसर-सरसर बारिश

पहली चिठ्ठी
भीत्र नहीं कि भोरिया
खोट लेता, अपने हुंदर पंख
इन विनों
भोरिया बन जाता विदा में व्यापारी
करता व्यापार सही का।

(दो)
जितना गड़बड़ा
आकाश में बादल
जतन में बारिश जाता कलेखा
धरा का

रोश को
शीतक बादर
उड़ता सुखे पत
धरा कर रहे हो जैसे
मिलन-सनगर

(तीन)
बादल जब
गायब-बसती
घर के बेटे में सपने हैं चौथियाँ

आकाश पिया का
मिलता जब अमृत-स्वरूप
घर की कोर में फूट जाती
दो कौंता।

(चार)
बारिश के दिनों
हर दुखाला जोड़ घर देती है
आकाश को नेह-निशंकन

सुभाष
घर की देख में हिंदी जो नभी
वह आकाश के प्रेरण जो की।

ओम नामकर
(29 जनवरी, 1980)

सिखार : एम.एच. (हिंदी एवं राजस्थानी)
पी.एम.एस. (हिंदी), न.जे.एम.सी.

संकलन : ‘निवासराय’, ‘श्रीति’, ‘जलकी मांड्रा', 'भूमि की तरह', 'देखाया एक दिन',
विवाहित पर चारिशा

पुस्तक व समाचार : कवितार्ग ग़व दी पाँडुलीनी

'निवासराय' के सौरे संतले पर निर्माण आकाश-पुस्तक-2015, वेंडसन, वा, व्हिसर्टन एकधी 
आकाशी नहीं पतित द्वारा राजस्थानी कविता
संजो ‘जलकी मांड्रा भूमि की तरह’ पर ‘पुस्तक \nआकाश-पुस्तक-2012’, रतनस्या, वारिश, जनार्दन, 
उदार पुस्तक वारिश कविता देखाया, एक
‘देखाया एक दिन’ पर सुनाने जोही पुस्तक, 2010-11.

आश्चर्य साहित्य पुस्तक एवं संस्थित
आकाशी, वारिश द्वारा विकास एवं कविताओं
‘संस्करण व अग्रणी जनार्दन’ पुस्तक, 2011-12 आदि।

संक्षेप : तेमने द्वारा पुस्तकार्ता
संपादक : omnagaretv@gmail.com
वर्षा की ऋतु आई

हीम जी ने कहा है कि रोमन पत्नी
राखिए, विन पानी सब सूज। पत्नी
साबून में आता है। मैं कहता चाहता हूँ कि
ब्रह्मज्ञ साबून राखिए, विन साबून सब
सूज। साबून का सूखा होते ही भारत के निकट
ग्राह्य को गुल सपने आपने लगते हैं। लोक
बस्तन की बुढ़कियों का राजा खोले समय यह
झूठ जाता है कि नर्म निम्न बस्तन बढ़ार नहीं
आ सकती। जब पानी ही नहीं होगा तो कैसे
पौधे पत्तें और कौशी उस पर पूल आसमानी?
जल ही आपसी है और जल का स्रोत है वर्षा।
करने वाले तरह कर सकते हैं कि वृद्धि पर
जल की क्षीय कमी, 70 प्रतिशत धरती जल
से डकटी है। पहले वर्ष ते डक है। अगर
जल ही जल है। ये बचकनी जाते हैं। समुद्र
का जल जल हवारी पास मूड़े खड़े बनाये
और जगा देता है। वृद्धि पर उपलब्ध जल
cा मात्रा एक प्रतिशत जल ही जीवों के
उपयोग का है। तथा एक प्रतिशत को सामा
पूरा रोक नहीं पाते, बसकर पुनः समृद्ध से जा
पिलिया जाता है। जो बचता है उसे भी हमारा करा
बाहर ब्यापा देते हैं। उस गर्मी जल को जुड़ा कर
हमारे को लौटता है वर्षा।

दो रुपये बाचने के लिए गर्म पानी
करते समय भी निर्भर करते हैं कि कहीं गर्म
भाषा नहीं जलाए। कल्याण करने के
कारण कि आपको अपनी आवश्यकता का जल बाध्य
दरा जुड़ा करना होता है कितना निर्भर
आता, गर्म सूर्य पूरी धूमधामसियों के लिए
जल की जल-प्रतिशत जुड़ा कर देता है। पानी
की एक बोतल का यह आपकी मालूम है,
गर्म सूर्य है, भित की नाट ही नहीं करता।
जो जल बचकर हिंद महासागर या अन्य
सागर में जा मिलता है उसे पुनः किस्मत तक
पहुँचाने का कार्य भी जुड़ना ही करता है। सूर्य
के आदेश पर पानी भरकर दौड़े जल आते हैं।
सागर के भार होते ही गाल माला बड़ी जाता
है। गर्म सूर्य जल के रक्षण का कितने
प्रतिशत नहीं करता।

सूर्य हमारे लिए पानी जुड़ा करने के
लिए उपयोग हैं। बालों के लिए एककॉट
जल को जुड़ा देखिये से बाकी उत्तर तक बीच
हमारे पिता प्रभात थे।

तभी उन्होंने गिलास में रखा कछू पानी दिखाया। मिथा ने पूछा, यह ज़ूठ तो नहीं है?

हमने कहा, कछू ज़ूठ की बात करते हैं, इस ज़ूठ को पहले असंख्य बार पीया जा चुका है। पूर्णक का एक प्रतिसाध ज़ूठ का ही उपयोग हम बार-बार करते हैं।

कोंच के गिलास को काम में लेकर बोकर रख देते हैं। उस गिलास से पहले फिक्तने ने पानी पीया उसका कोई हिसाब नहीं होता। टीक बैठे ही होता है की किसी माता को पहले फिक्तने जाते, पीये या तो जल पी चुके हैं, इसका कोई हिसाब नहीं है।

गामी पापा पानी के अंज बस पर सवार हो जाते हैं। इस वेद वम्बन है।

गीत का ललकदार बढ़ने के साथ धारा की गलती हो जाती है। पापे के अंज एक होते हैं तो उन्हें सुधार रखने में हम कोई परेशानी नहीं होती। जल कुंज बस पर उठकर चढ़ी हो जाती है तो पापे के अंज आप अंज में चिपक सुपूर्ण बुझे हों में बदलने सकते हैं। बाबी की उपदेश होती है।

बाबी की आदेश राज से उन्हें धमन या जब्र आवेश पेना कर जाता है। विनिरस अंखें के बाद पान में आने पर रचना आवेश उन्नीप लगकर एक बालक से दूरसे में जाता है तो मार्ग चमकता है, साथ ही गजन वेदा होता है।
पुष्पी को सीता रही है अमृतीय वर्षा वायु पर धूम्र का ही एक विकार नहीं है। इसमें अपने मौर्य समाज में धूम्र द्रष्ट्र पर भी ध्वनि रहती है, गर्मी भी जल के स्थान पर गंधर का जल वर्तता है। ऐसा हुआ बायोमैशन में गंधर के आंशिकों की उत्प्रेरित का करार होता है। वर्षा के कई मानों में भी अमृतीय वर्षा होती है। वर्षा जल में अला की मान्य वर्षा के वातावरण के प्रभावित होने की मात्रा पर निर्भर रहता है।

कहीं-कहीं तवा गंधर का जल के बाहर थते से बादरार पुण्यते कष्टों के जलने के साथ ही गाजन व जलपि के पथल होने की घटावाएँ हो सकती हैं। अमृतीय वर्षा वर्षीय का एक पहली वर्षीय बायोमैशन बन गया है। जल में बड़ी अभाव जलपियों की सीता रही है। तो पूरी की बड़ी अभाव नहीं थी क्योंकि व्रात को मनाने का कारण होता है। यहां भारी वर्षीय बायोमैशन का प्रभावित होना स्वाभाविक है। खानों या अन्य संस्थाओं को पुनर्गमन होने के साथ संसाधन जैसे एक्सियोमस्क या अमृतीय वर्षा के विकार हो सकते हैं।

कुछ अस्तान वातावरण में स्वस्थानीय शुष्क गस्त उपनयन होता है, गरम या अर्द्ध-गरम शुष्क नहीं बुझे। अमृतीय वर्षा का कारण बायोमैशन निर्घन करती है। कोस्मोस वे पेट्रोलियम पेट्रोलियम के जलने पर कर्मों, गंधर व नाइट्रोजन के ओक्साइड वाले होते हैं। ये ओक्साइड जल में पुष्पुण्य शुष्क बनाते हैं जो गरम के जल में रास गृहीत करते हैं। पूरी अमृतीय वर्षा है। अब तब जब तीव्रधन्यों में निकलते देखा तो अमृतीय वर्षा गुणधर के संयुक्त उत्पादन को चौथ रखने की सरदार रहती है।

अमृतीय वर्षा की उत्पत्ति के लिए हम सवा निर्भर हैं। हम वातावरण को अनुकूलित करूँगे या पण्यिक होने के साथों के उपयोग में जितनी अष्टिग उत्पाद कर पूर्व करते हैं। जब हम इसका ध्यान देते हैं तो उपयोग आसानी से उपलब्ध हो जाता है। इसके लिए हम उत्पाद करने का कारण एक एक निर्धारित व्यावसायिक उपयोग का बनाना। ये व्यावसायिक उपयोग के बारे में झलक देने से पहले उत्तम उत्पाद करना होगा। केवल कई बार हुई विद्युत वाली वर्षा का कारण एक प्रस्तुतीय शैली देखें। वे अमृतीय वर्षा के बारे में सूचना देने वाले वह स्थान है।

वर्षा के बारे में शेष शेष में धूम्र वाला वर्षा का कारण एक प्रणाली शैली देखें। ज्यादा से ज्यादा विद्युत वाले वर्षा का कारण एक प्रणाली शैली देखें। ज्यादा से ज्यादा विद्युत वाले वर्षा का कारण एक प्रणाली शैली देखें।
पुस्तकों की दुनिया बेहद रंगीन और सुंदर है। यह ज्ञान की समस्त शाखाओं से आपूर्ण है। यहाँ मनुष्य का अद्वैत कल्याणशीलता की शानदार अभिव्यक्ति मिलती है। यहाँ मानव के अनुमान सिद्धि और शृंखलाबद्ध विचारों का अंतर्वर्ती सबसे साथी फैला हुआ है। इस जगह मनुष्य के कलाकृति-बोध और रंगों से खेलने की असंख्य कलाकृतियों अपना समयों में विस्तारित मिलें। यहाँ आत्मा, वर्तमान और भविष्य का वर्तन आपसे बहुत संघात करता आलिक और आध्यात्मिक सुख की राह बताती है। यह नरक नहीं, स्नान का भाग प्रसार करती है। पुस्तक मनुष्य के खुद की प्राप्ति है। यह जीवन के महत्व का अंतर कर देती है। वह महज एक यात्रा नहीं, प्राप्ति है। यहाँ केवल जिज्ञासा या सत्य ही नहीं, उसका समाधान भी है। पुस्तक केवल आकृति-आकृति प्रार्थना का भोज ही नहीं, उसकी अपनी आकृति वाला है। इसी तरह के मानक "पुस्तक" के संबंध में 'हिंदी विश्वकोश' में लिखा है कि: "विवि

पुस्तकों मनुष्य का साथ करने लायक हैं

दिख जाएगा। यहाँ फुस्कती चित्रों की संख्या और आकार से यह ज्ञान देवता की शाखाएं पर गुरुदेवी उत्सव करती नजर आ जाएगी। इस आकार से आकार की हुकूम और दीवार से साक्षात्कार हो सकता है। यहाँ आपके शास्त्र अनुसार गुण और उसकी नितंत्र जिज्ञासा-पुण्य से सन्यास हो सकता है। यहाँ आपके वैज्ञानिक अनुसंधान और विश्लेषण प्रकार की दुनिया विश्वास मिलें।

आपकी जिज्ञासा का जवाब, आपके प्रश्नों का उत्तर, आपके विचार का वितरित आवश्यकता, आपके भान-उत्तर-शक्ति का साथ-कुल गिरावट-आपकी दुनिया, आपके प्रतिकूल और आपके अभ्यास का साथ-कुल पुस्तकों के इस बेहद सुंदर संसार में मिल जाएगा। सच में पुस्तक मनुष्य जीवन के सार्वभौम समय से साक्ष्यात्मक होती है। यह सच में मनुष्य की जिज्ञासा का प्रतिविक्षिप्त है। कवितावेदन यह आज़ाद वक्त में मनुष्य की पत्थर-प्रभावित कुल है। यह पीने-पील तक में राजनीतिक प्रचीर के साथ के प्रायः सभी देशों में पुस्तकों को पकड़कर उनके लाभ उठाया जाता है। दुनिया, भाषा, विकास और व्यक्तिगत समय का यह महत्वपूर्ण साधन है। ज्ञान और बस्त के बीच पुस्तकों का बादशाह संविधान है। ज्ञान का सर्वज्ञ, समय, संस्कृतिक और प्राचीन व्यक्तिगत स्तर पर पुस्तकों से ही संभव है।" (खंड-8, प. 290)

पीडीएडिप्स, पुस्तकों के महत्व और पुस्तकालयों के मनमोहन और समुद्रिक पर विचार करते हुए विश्व के प्रसिद्ध विद्वान् आर्थर इंडर्न ने लिखा कि—"राष्ट्रीय पुस्तकालय का प्रशंसा करना संयुक्त राष्ट्र के प्रतिस्थापित विद्वानों को इतिहास और साहित्य की सामग्री सुलभ करना, अवधारणाओं, लेखकों और शिक्षितों को विकास करना है।\" (हिंदी विश्वकोश-खंड-8, प. 293)। इसके प्रायः इस कल्पना से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि पुस्तक केवल निरंतर की साक्ष्य करने और अनपड़े की महज
पढ़ने के लिए ही जरूरी नहीं, यह अध्यापकों और पूर्ण सिद्धांतों को ज्ञान की ओर और फाइ शाखाओं से परिचित करने के लिए भी आवश्यक है।

भारत में पुस्तकालय आयोजन के अध्या प्रसिद्ध भारतीय दिनांक 20 था। रामनाथ ने भी ने के सार्वजनिक विकास के लिए पुस्तक के नवस्था को उपयोग से स्वीकार करते हुए राज्य पुस्तकालयों की कर्मचारियों को निष्पादित किया। उनके अनुसार, “देश के सार्वजनिक अवधारणाओं की दुरंत और पुस्तकालय का मुख्य कार्य है।” तथा ही देश के प्रादेशिक नागरिक को जानकारी की संचयन सुविधा प्राप्त करना और जनता की सिद्धांत में सहायता देने के बिकाश किया। डॉ. रामनाथ के हाथ से भारतीय पुस्तकालय का मुख्य कार्य का उपयोग करना सही है।

शैक्षिक परिक्रमा के लिए पढ़ाई जाए की गई स्वतंत्रता का जॉन है। फ्रेडरिक दिनांक 8 था। डॉ. रामनाथ के इस कार्य के लिए जानकारी है कि पुस्तक के केन्द्र का निष्पादित विषय सुविधान नहीं होगा।

आगर देश के नेताओं की गैरवालगी और पुस्तक का बेहतर उपयोग करना है।

इस पटक से राज्य का सार्वजनिक विकास के लिए भी आवश्यक है।

गार कंबेट दी तिम यहीं भी निष्पादित एकही एकाधिक और अध्यापिक है, लेकिन मैं इस प्रकार में “पढ़ाई” किंचित पुस्तक की तरह की है; यह भीतरी नहीं है आगर बांटने की कलात्मक कहती है। यह विश्व का एक हिस्सा बता सकता है, न केवल इसे ही, बल्कि यह जनता की कलात्मक संस्कृति के लिए समर्पित है।

गार कंबेट दी की सिद्धांत यहीं भी अध्यापिक हैं। विश्व का एक हिस्सा बता सकता है, न केवल इसे ही, बल्कि यह जनता की कलात्मक संस्कृति के लिए समर्पित है।

पुस्तक का इतिहास

विश्व में पुस्तकों का इतिहास प्रारंभिक विकास के लिए शुरू हुआ है।

अनुसन्धानों में यह बताया है कि केवल रामनाथ ने 1880 से 1890 के दशक में विकास के दौरान पुस्तकों का प्रयोग हुआ।

पुस्तकालय के प्रमुख संग्रहालयों ने राज्य का प्रयोग अधिक उपयोग किया।
पर लकड़ी के बेलन होने थे, खुद प्रयोग किया। तेलों ने इससे आवश्यक मिठाई, बंदी व गाय के बाल की कमान और अगर ईंट बाँटने के प्रयास से खुद फिर कर और इस पर फक्त है पर (पंछ) की कल्ता से संकेरे तरह में सिखा जाता था। चीनी तो लगाने का राजस्व कार्य करते हैं। ये लगाने के फलकों का भी इततमाल करते हैं और इन्हें हिंदी या धातु की नीहर से ‘अपने’ भी थे। भारत में भुजे या लिये हुए मोटाओं को भोजन या भोजन के टुकड़े से बोलना रखा जाता था। तारामों और तेलों का इस्तेमाल भी होता या भोजन के टुकड़े से बोलना रखा जाता था। जो भी जीवन को लेकर भी जीवन को लेकर भी होता था। (झोंक हिंदी विश्वासदेव कोट-8, पृ.290) भारत में इस प्रकार की पानी निकलने को नहीं गोपनीयता, दुरुस्त या अदालत या प्रणयपूर्ण रखा जाता था।

पुस्तक के विकलांक की कम दे देखे तो वह लकड़ी के बाँटों से खाओ की कम आयंत कर न प्रतीत, त्यहुँ का ओर नमूने से देखे तो यह काम रचैल नहीं था और अधिक महत्व था। इससे भी विविधता का होगा नहीं, जीव न हो संधी का दिया गया। 1941 ई. तेलाव (Pl. sheng) नामक एक चीनी व्यक्ति ने गृहिणी के अधार बाल और उसे बांटता। इस रक्त को स्वातंत्र्य विषय से गृहिणी बांटकर कही पुलकों तैयार की। हिंदी विश्वासदेव कोट-8 के अनुसार जिस में 224 में लकड़ी या धातू पर उल्लेख करते भी प्रविष्ट हो गए। इस श्वातंत्र्य अवसरों से पहली पुस्तक दानवल जानें यही। इन्हें इस कारण के एक विविधता विश्वासदेव ने स्वस्थ अश्वान और उसे बांटता।

पुस्तक के विकलांक की कम दे देखे तो वह लकड़ी के बाँटों से खाओ की कम आयंत कर न प्रतीत, त्यहुँ का ओर नमूने से देखे तो यह काम रचैल नहीं था और अधिक महत्व था। इससे भी विविधता का होगा नहीं, जीव न हो संधी का दिया गया। 1941 ई. तेलाव (Pl. sheng) नामक एक चीनी व्यक्ति ने गृहिणी के अधार बाल और उसे बांटता। इस रक्त को स्वातंत्र्य विषय से गृहिणी बांटकर कही पुलकों तैयार की। हिंदी विश्वासदेव कोट-8 के अनुसार जिस में 224 में लकड़ी या धातू पर उल्लेख करते भी प्रविष्ट हो गए। इस श्वातंत्र्य अवसरों से पहली पुस्तक दानवल जानें यही। इन्हें इस कारण के एक विविधता विश्वासदेव ने स्वस्थ अश्वान और उसे बांटता।

अनुपूर्व समस्त प्रकारों द्वारा पुस्तक घायल की दुनिया में एक उल्लंघन जन्म न हो जाता है। इसलिए अगर 50 साल में चल दौड़ों के प्रयास के कारण सबसे ठीक 50 दिन पुस्तक इस विवेक से साभार। व्यस्तता है कि इस रात्रि को इसे सुनिश्चित उपयोग से गृहिणी तो ही हो। 15वीं शताब्दी में वे टाइप और अधिक घातक विषय जीवन में दुभाव और सुंदर हो गए। अब पुस्तकों को अक्टूबर (Octave) का सूर दे दिया गया। इसके बाद की शताब्दियों में पुस्तक की विनायण के बांटे और विनायण का अनुष्ठान नहीं, जिससे पुस्तक रोजाना और दमियों रह गए।

विषय में आवश्यक पुलक के आंग्रेज़ी अभिव्वल की ही नहीं है। स्वरुपमुद्रा द्वारा यह दौड़ों का शुरु करने का काम नहीं होगा 400 वर्ष में तक चला, बिना अभिव्वल कोष के आयोग में पुस्तकों को भी ठीक नहीं आयोग। सारण और नवमुद्रा ने पुस्तकों की आयोगिता गाय भूली नहीं और आयोगिता अभिव्वल की जानी है। पुस्तक की मुख्यता पुलक घायल के साथ और नवमुद्रा का आयोगिता किया। 1800 ई. में स्तानहोप (Stanhope) ने “दौर-सुनाचे ये सूर दे दिया। इसके बाद की शताब्दियों में पुलक की उलंघन के बांटे और विनायण का अनुष्ठान नहीं, जिससे पुस्तक रोजाना और दमियों रह गए।
पुस्तक का तत्व "प्रारंभ" का काल लिया जाता था। पुस्तक का भुवन-मुख तथा पृष्ठ-पृष्ठ का ज्ञान का काल जाता था। इसलिए विभिन्न रूप में इसका महत्वपूर्ण होता था। प्रारंभ का ज्ञान का काल जाता था। इसलिए वेद ने तथा पृष्ठ-पृष्ठ का ज्ञान का काल जाता था। इसलिए वेद ने तथा पृष्ठ-पृष्ठ का ज्ञान का काल जाता था। इसलिए वेद ने तथा पृष्ठ-पृष्ठ का ज्ञान का काल जाता था।

पालत में पुस्तक की रिश्तेदार

पालत में पुस्तक का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान काल

पुस्तक में पुस्तक का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान काल

पुस्तक में पुस्तक का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान काल या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान काल

पुस्तक में पुस्तक का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान काल या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान काल

पुस्तक में पुस्तक का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान काल

पुस्तक में पुस्तक का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान काल

पुस्तक में पुस्तक का समान कालचक्र या ऐतिहासिक काल का समान काल
पत्र व वट पत्र पर पुस्तक लिखी जाती है। एक्सिम, जो अन्य पत्र पर
पुस्तक लिखकर अभास करते हैं, वे मीठे दृष्टि के प्राप्त होते हैं।

पुस्तक के आकार में गुप्तनाथ मिश्र-पिनार देवताओं की बात की कल्पना की गई है।
तत्त्वायु में श्राद्ध और प्रशासिक, रेत में सूरा
और कालियुग में स्वयं श्रीराष्ट्र सिंह-आकर्षण में निवास करते हैं (हिंदी
विश्वविद्यालय खंड-4, पृ. 235)

पुराण सामर्थ्य के समय से तिलकार की उपस्थिति है। पाणिनि
व्याख्यायम् से पता चलता है कि उनके पहले भी पत्र, कोक, पत्र, सूरा
और हङ्गारों जाति शब्द प्रकट किए थे। श्रंन के विषय में श्रंन का नाम शंक्र,
पत्र को करदिया विश्वास कि दिखे जाते और उसे सूरा में एक साथ
से सुनाए जाते थे। इन पुस्तकों के कारण, श्रंन का शब्द गया।
पहले ताल
पत्र, सुधित, श्रद्धाश्रृंग, बक्कल जाति में लिखनें की तीत थी, जो आज
भी 'पोषी' नाम से जानी जाती है। वे पोषीयाँ जानकर रही जातीं थीं,
उसे 'श्रंकुड़िया' कहा जाता था। इंग 3000 वर्ष पहले आज्ञाते जो
आज्ञासंग्रह के साथ श्रंकुड़िया और औपन्न पर श्रंकुड़िया लिखे जाते थे।
छत्तीसगढ़ी, श्रंकुड़िया का मुक्त और गहड़ादर के विश्वसिका
और संपत्तियों में यह श्रंकुड़िया शब्द सुनिश्चित किया गया।
बौद्ध के श्रंकुड़िया और नानन्दविकासालालों में निवास प्राप्त किया
होने के प्रमाण मिलते हैं। छत्तीसगढ़ी, श्रंकुड़िया, श्रंकुड़िया
और संपत्तियों में यह श्रंकुड़िया शब्द सुनिश्चित किया गया।
बौद्ध के श्रंकुड़िया और नानन्दविकासालालों में निवास प्राप्त किया
होने के प्रमाण मिलते हैं। छत्तीसगढ़ी, श्रंकुड़िया, श्रंकुड़िया
और संपत्तियों में यह श्रंकुड़िया शब्द सुनिश्चित किया गया।
बौद्ध के श्रंकुड़िया और नानन्दविकासालालों में निवास प्राप्त किया
होने के प्रमाण मिलते हैं। छत्तीसगढ़ी, श्रंकुड़िया, श्रंकुड़िया
और संपत्तियों में यह श्रंकुड़िया शब्द सुनिश्चित किया गया।
बौद्ध के श्रंकुड़िया और नानन्दविकासालालों में निवास प्राप्त किया
होने के प्रमाण मिलते हैं। छत्तीसगढ़ी, श्रंकुड़िया, श्रंकुड़िया
और संपत्तियों में यह श्रंकुड़िया शब्द सुनिश्चित किया गया।
शांतिनिकेतन का वर्षा-उत्सव

वर्षा ब्रह्म के आगमन पर नमन यज्ञ छाया वाला यह एक 'ब्रह्म उत्सव' है। वर्षा ब्रह्म सदियों से अपने सींद्र दृष्टि से कवियों को आकर्षित करती रही है। इसी ब्रह्मों की रामी कह गया है। यह परसों को हरा-भरा कर समुद्र कर देती है। कव्य कवि, कवि किसान, पूरा का पूरा जनजानन सी हीके आकर्षण में दूध जाता है।

कवि का तो प्रकृति से प्रभाव संभावित होता ही है। ब्रह्म कहे कि प्रकृति ही वनस्पति की कवि बनती है। तो अतिशयोक्ति न होगी। वही कारण है कि बारिश के कलकक्ष के कोलाभ से भाग निकले, कवियोंक प्रकृति उन्हें रोमांचित करती रहती थी। वे गाँव के व्यक्ति थे। नदी, पहाड़, गाँव एवं वहाँ का तस्रा जीवन, पेड़-पौधों में उनका मन खुब रहता था। सुमंद्र, प्रकृति के कारण उन्होंने खुब यातना की। जब से वह जीवन में उसका पता चला कर तिथि करते थे और शांतिनिकेतन रूपी अपनी प्रेरणागता में उसको अमृतरजाप पहनाते थे। उनकी इसी प्रकृति के कारण हमारा यह शांतिनिकेतन विविध खुबियों से समृद्ध होता चला गया।

गुरुदेव को काशी व अन्य देव-स्थलों पर ब्रह्म-उत्सवों को देखने का अवसर मिला था। वे इसका प्रभाव शांतिनिकेतन में भी करना चाहते थे। इसकी वर्षा उन्होंने स्वतंत्र गोलन से की थी। उन्होंने 1908 ई. में स्वतंत्र गोलन बाबू ने कवि-चर्चा के ध्यान में रखकर पहली बार 'वर्षा-मंगल-उत्सव' का आयोजन किया। 

ब्रह्म के आगमन पर चारों ओर मंगल ही मंगल छा जाता है, परंतु इसे उवाच ए रूप में में देखने का यह पहला आवार है। तैवानी विशेष उन से नहीं गई थी। श्री दुरीकर्ता करे के अनुसार दीन बाबू ने कवि विवरण रूप से मंगल एवं वह बादाद मात्र भाव गीत को गाया। वे गान में पूरा वातावरण आयामीक हो उठा। आयाम विद्युरियाँ शाली ने भी संकृत में श्लोक
पढ़ा। थान-कारणों ने विशेष रूप से नीली-पीले वस्त्र पहन, 
सब्ज़-भजन, पक्ष-पक्ष का साथ-साथ, इस 'वर्षा-गंगा-उसारा' 
को गोरीमाया नांद दिया था।

इसके बाद सन 1929 ई. में यह उदार कालकाट में जोरालोंको 
वाले कटकवाड़ी में नमाज गाया। सन 1922 ई. में राजीवन में 
वर्षा-गंगा-उसारा पर अपनी तीन कविताओं—भाषा, वर्षा-भजन 
और निसमा—की आवाज़ की। कुंवर के इस उदार को और अधिक 
भवानी सर नव 1936 ई. में दिया। इस उदार को 'पटली-सोना' (गाँगी 
सम-सोना) से जोड़े हुए बुधनबाग के तालाब के उत्तरांक का 
पैलटा दिया। खान, बुधनबाग इत्यादी के बाद ने बिजली 
वाला दिखाया, जिसे नई शाक्ति दी। आज भी यह 
तालाब जनसेवा का रहा है। निरन्तर धार्मिक व मनोकामना 
का आस्था उपस्थित रहने के कारण उसका कोरा पानीपंक 
से फैलाया जाता है। यह उदार आज भी शातिरस्त्रीय में 
विश्राम सारखे दृश्य के अभाव सतार में मिली भी यह दिवंगत 
दिन के निर्देशन का विना बनाया जाता है।

धुनों को उदार के सन में देखने की यह कोशिश निश्चित 
रूप से विवाहित रहे ने प्रभावित होने व राम में प्रभावित पैन का 
संकर अभाव है। प्रभावित पैन का आस्था उपस्थित 
करता है। इस उदार को 'पटली-सोना' का नाम दिया जाता है। 
वर्षा की अवधि पर यह गाया जाता है—

ऐसी आपको दुर्ग 
अनेक तब अपने तुम्हारा सुधार सुनुही चाहिए आपके 
.

संस्कृति का ही विस्तार है—शातिरस्त्रीय का 
'वुडारोगा' और 'संस्कृत-उसारा।' भाषा को हर-मारा रखने के 
लिए ही यह उदार का त्यसक है। प्रभावित पैन का आस्था 
करता है। पेड़-पीले के समान के साथ, रामे रखता है। 

प्रभावित के लोगों में वालियाँ जीवन का आवाज़ ही बल जाता है। 
इसका साधन भाषा है—संस्कृत-पैन, भारतीयों से आधुनिक 
यह शातिरस्त्रीय करता है। अब भी हाल ही 
भाषा, राज्यों में वुडारोगा की 
परंपरा को जीवित रखने के 
लिए ही उन्होंने सन 1928 ई. में इस 
उदार को क्षय दी थी। इस वर्ष संस्कृत-पैन में पहली बार 
वुडारोगा उदार मनाया गया।

शातिरस्त्रीय में वुडारोगा-उसारा भाषा को परंपरा दुइ इस 
प्रक्रिया का है—सबसे पहले यह स्वाक्षर तद जाता है 
जो प्रभावितकरण रूप से एक विकुल-सोना की 
पुनर्बद्धता की जाती है। सुधार 
के पूर्व को भी, जैसे बृक्ष की 
कुन्दु की मूर्ति होती 
सप्त छात्रों के समावेश सुधार के भाषा का बनाया 
जाता है। उस वि 

संस्कृति गायन को अंगीकार करते हुए वाली 
की दृष्टिकोण का भाष्य 
करते हैं। इस उदार को 
करते है। इस उदार को नोटक्साल को 
की दृष्टि-स्वरूप अभाव है। इस विचार में रितीदास, एकमसार, 
संस्कृत के राज-साहित्य रूढ़ि-पीत—'पिते बल साती होते' अभाव है।

आय-आय आमदर अंगी 
अतिशय वालक दुि-दि नानावर दोहे संयाने चली 
चली आमदर पर चली।

अब तो यह उदार रविवर-सूर्ये से लोट गया है। यही कारण 
कि 22, आज्ञा जो कि राम्बो का महाध्यक्ष दिल्ली (सुरुआ दिल्ली) 
को इस उदार मनाया जाता है।

वुडारोगा-उसारा के उदर के दिन हलकरक-उसारा शातिरस्त्रीय 
में हर बार संयान होता है। भारतीय शातिरस्त्रीय परिवार है कि यहाँ से 
राजा वर्ष में एक बार कुछ जल बनाते हैं, और उस दिन विवेचन रूप 
से साने-नज़र बैल के खेती तक खेती बाली की 
पथार पर राधा करते थे। रामा जनक ने भी इस चलने पर समय ही 
सीता को पाया था। हलकरक
दिल्ली में न्याय की पुस्तक का लोकार्पण

राजस्थान पुस्तक न्याय, भारत द्वारा प्रकाशित एवं गुरुद्वार नागरिक, आदर्शपुर (सेवा प्रतिनिधि) द्वारा संचालित पुस्तक "सीतारा हिंदी" (पुस्तक) का लोकार्पण का तारीख 26 जून, 2016 को नर्मदा दीर्घे के इवेंट टंडनेलांड सिंडिकेट में लोकार्पण किया गया।

नागरिक संस्थान विकास संस्थान के उहलादा शिबरा विभाग के श्री सूरज वर्मा, भारत द्वारा प्रकाशित पुस्तक का लोकार्पण किया। उपन्यासदार राजस्थान पुस्तक की जनकी शासन एवं 'देशकरन करने वाला' के रूप में सम्बन्धित को हुए कहा कि, "यह पुस्तक हमारे लोगों की दुरुस्ती की बदौलत की रचना है जो सभी लोगों को इसका उद्देश्य होगा।" उन्होंने पुस्तक की नवीनता प्रदान करते हुए कहा कि, "इस पुस्तक की रचना से लोगों के लिए एक इतिहास बनेगा।" अन्य उपस्थित समस्त समाज के सदस्यों के साथ उन्होंने हाथ मिलाकर पुस्तक का लोकार्पण किया।

इस अवसर पर कार्यक्रम के गुरुद्वारा संगीतक, भारत द्वारा संगीतक एवं विज्ञान, भारत द्वारा दानकार श्री श्रींगकी देवी के साथ उपस्थित विशेष विभागों के मुख्यालय अंतर्गत विभाग के अध्यक्ष के साथ उन्होंने हाथ मिलाकर पुस्तक का लोकार्पण किया। इस पुस्तक की रचना एवं उस के संगीतक के लिए उन्होंने हाथ मिलाकर पुस्तक का लोकार्पण किया।

दृ. आंबेकर पर संगीतक

दृ. भीमराव आंबेकर के 125वें जन्म वर्ष समारोह के एक भाग के रूप में, राजस्थान पुस्तक न्याय, भारत द्वारा संस्थान विकास संस्थान के साथ मिलाकर, 14 अगस्त, 2016 को हास्ताक्षर राजस्थान के संस्थान विकास संस्थान के दृ. भीं श्री. आंबेकर का जीवन का विदेश दिन आयोजित किया। विदेश के रूप में उन्होंने आंबेकर का जीवन का विदेश दिन आयोजित किया। विदेश के रूप में उन्होंने आंबेकर का जीवन का विदेश दिन आयोजित किया।
शारजाह में बाल पुस्तक चित्र प्रदर्शनी 2017

शारजाह में बाल पुस्तक चित्र प्रदर्शनी 2017 के लिए, शारजाह में एक प्रदर्शनी का आयोजन होने जा रहा है। बाल कलाकारों के व्यक्तिगत चित्रों को इस नामिक कला प्रदर्शनी का आयोजन शारजाह विश्वविद्यालय पैलेट्स द्वारा किया जाएगा।

प्रदर्शनी में भाग लेने वाले कलाकारों के एक सूची में उनके नाम और तारीख हैं:

- 15 जनवरी, 2017
- 16 जनवरी, 2017
- 17 जनवरी, 2017
- 18 जनवरी, 2017
- 19 जनवरी, 2017
- 20 जनवरी, 2017
- 21 जनवरी, 2017
- 22 जनवरी, 2017
- 23 जनवरी, 2017
- 24 जनवरी, 2017
- 25 जनवरी, 2017
- 26 जनवरी, 2017
- 27 जनवरी, 2017
- 28 जनवरी, 2017
- 29 जनवरी, 2017
- 30 जनवरी, 2017

भारतीय विद्या भारत में भारतीय विद्या एक संस्था जो भारतीय विद्या का प्रचार और प्रशिक्षण का उद्देश्य है। इस संस्था के लिए भारतीय विद्या पुस्तक का प्रदर्शन किया गया।

शार नदी की चर्चा को ‘शरद जोशी सम्मान’

शार नदी को ‘शरद जोशी सम्मान’ प्रदर्शनी का प्रदर्शन किया गया। इस आयोजन में भारतीय विद्या, आदित्य, शृंगार विभाग तथा शरद जोशी को भेंट के गांव शरद ने उनके लेखों का गांव किया।

पुस्तक संक्षिप्त 47 पुस्तक संक्षिप्त 47
वातावरण : पोएट्री ऑन साउथ बैंक पुरस्कार समारोह 2016

विशेष बिना प्रगाढ़: पोएट्री ऑन साउथ बैंक पुरस्कार समारोह 2016 का आयोजन, विधायक और मिल्डेन ड्यून के साथ, अमरा चार्ल्स, "वातावरण" के संरक्षण और गुणवत्ता समाचार और प्रेम-सक्षम नियम समाचार पत्र के संस्थापक श्री शेरी. पेटेल और बॉस्टन नामक और गैरसंतायन की उपस्थिति में हाउस लाउनर के समारोह में किया गया। समारोह का अवधारणा इलाहाबाद, लंदन के अवधारणा अंतरालिक समिति के सदस्य ने की।

प्रतिभाएँ कलाओं में शामिल थे—लेखक और शास्त्रीरत्न 'वातावरण' की संस्थापक, जगदीश देव राम, ब्रेटन में गुणवत्ता विद्या के अमीर संस्थापक, श्री ज्योति राहा, लेखक और शीर्षकीय विश्वसंस्थान की पूर्व प्रमुख श्री. अप्पला गिर्नार. दोनों अमरा को दर्शनीय और राजनीतिक संघर्ष जनवरी में लंदन, लेखक और योगदान दीना के अवधारणा द्वारा लंदन, श्री अमरा और वातावरण को प्रमुख धर्माधिकार शिक्षा वायुस्थान।

नेहा नर्मन, निंदिया, समासना, शूली और रूटीन अन्य के सर्वेक्षण के लिए कार्य करते थे।

प्रस्ताव और अनुमोदन कमीशन ने बारे में वातावरण का समारोह से समाप्त किया गया जिसने नेहा नर्मन, पूजा, वृन्द-ताल, अभियुक्त और हाजिर श्री दित्य नर्मन को कार्यकर्ता का सम्मान किया था।

अब्दुल्ला जन-जर्हती पर अहमदाबाद वायुस्थान कार्यक्रम का आयोजन

शेरी. जी.उ.अ. अब्दुल्ला को अहमदाबाद के हवाई अड्डे पर अहमदाबाद के एक साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। अब्दुल्ला की भीमारी ने उनके लिए विशेष तैयारी की गई थी। उन्होंने कहा कि अब्दुल्ला ने इस वकील के लिए शिक्षा, उद्योग और वातावरण और राजनीति आदि में अपनी उपलब्धि के साथ तर्क दिया। उनके उद्योग, संस्थान और पुस्तकालयों के बीच कोई संबंध नहीं है। विशेष नृत्य तत्कालीन का तरह है, इसका उपयोग कितना तरह किया जाए, इसका आधार हमारे विदेश पर है। अब्दुल्ला के बारे में जीवन में भारत-अमेरिका के दृष्टिकोण होते हैं। विशेष, विवाह और पुनर्जन्म के तरीके द्वारा पुनर्जन्म, इसका नाम नहीं है। लेकिन उनके मृत्यु पर भी विशेष उद्योगकर्ता, लेखक, पुस्तकालय और वातावरण का प्रमुख देखा गया है।

तेजी मुल्तानी वायुस्थान के अध्यक्ष श्री केरेन मुल्तानी ने अब्दुल्ला के प्रेरणा के लिए कहा कि देश के महापुरुषों को कार्य करते थे।
संपर्क की इच्छा व्यक्ति भारतीय समाज की विशेषता है— बलदेव भाई शर्मा
राष्ट्रीय पुस्तक न्याय द्वारा प्रकाशित ‘1857 का लोक संग्राम और राष्ट्रीय सक्षमिता’ तथा ‘आज्ञाना’ पुस्तकों का विवरण

मान्य देश कभी भी पूरी तरह से विविधियों का पुलाज नहीं रहा, कोई भी इकान हो, यह का समाज परमाश्रय का बिंदु के संरक्षण का प्रयास कर रहा। यह अपनी राख स्वर्ण कर लेता है, लेकिन शिकारकों की राख करना मुश्किल होता है। इतिहास में महान उर्मियाँ या कुछ दुर्गे नहीं होता, यह राष्ट्रीय जीवन की प्रेरणा होता है।’ यह उद्धरण ये राष्ट्रीय पुस्तक न्याय, भारत, इस दिल्ली की जगह बलदेव भाई शर्मा के। वे जीवांची विश्वविद्यालय के गवर्णर समाधान में आविष्कृत राष्ट्रीय पुस्तक न्याय द्वारा प्रकाशित हो उत्साह के लोकसंग्राम समाधान में अधिकारी आस्वदन से बोल रहे हैं। इस समाधान में सुनिए अधीक विषयविद्यालय के कुछ बातें तथा इतिहासकार श्री. आर्यन ने दे। राष्ट्रीय पुस्तक न्याय द्वारा प्राप्त प्रकाशित विवाद संबंधित संदर्भों को। जीवांची विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय प्रकाशित बातों से संबंधित यह कार्यक्रम खेलने के लिए ये पुस्तकों का संशोधन करते है, वे भी— ‘1857 का लोक संग्राम और राष्ट्रीय सक्षमिता’, लेखक प्रेमदेव मार्गवत्ता द्वारा ‘आज्ञाना’, लेखक भाई जीवांची गीता।

कार्यक्रम के प्राप्त में डॉ. पुस्तक. शर्मा, रिश्तेदारों, उपजिन, षार्टी आमा पार्श्व, देव श्रीमानी और गिराड़ी श्रेय गीता ने अविश्वसनीय बातें कुछ भी संग्रह की।

वास्तव तथा अंदाज़ जवाब दिया कि अभाष में यह आग फिराता, मृगुरू का संग्रह था। उन्होंने बताया कि विश्वास का पाथुपाथु किसड़ी लाज भारत के जीवन का एक निर्माणक स्मारक रहा है और शिकारसदृश ही विमुख कर देता है। उन्होंने भारतीय सशस्त्रता के इतिहास के राष्ट्रीय परिस्थिति में नए भारी तितलाए जा देते है। विश्वसनीय समाधान के इतिहास का राष्ट्रीय परिवर्तित करना उसे इतिहास का आवश्यकता भी बताने से विवाद करते है।

विश्वसनीय पुस्तकों में से एक प्रकाशित करने की समीक्षा करते हैं प्रकाशित चीनेस समाधान दुर्गुणों के प्रकाशित करने और संदर्भों में गैर को मिलाते हैं यह भी है कि पूर्व दुर्गुणों के स्वयं व पूर्व समाधानों में प्रकाशित एक महानायक विषय है। उन्होंने इसके कस्तों का जीवन का पुनर्लिखन करते हैं।

शासीत्य शिक्षा विभाग, दिल्ली में इतिहास की विभागशाखा द्वारा: संस्था भारत ने लाखी में भारतीय स्वातंत्र्य और अर्थनीति का प्रतीक निर्माण करने हुए काल की इतिहास न ही नेशन अमन्त्रित है और न ही जीवांची प्रमोद भारती की पुस्तक साहित्य हैं। उन्होंने जानने कि उन्हें जोड़ने जानने जानने में इतिहास से मिलता है कि तथ्यों का मिलने से उन्होंने स्पष्ट करने पर हमेशा नए प्रामाणिक सुलझाने हैं लोगों का संघर्ष के सुझाव दे। कार्यक्रम के कुछ विषयविद्यालय के आशा दे। उन्होंने जोड़ने के दिल्ली में इतिहास के उत्तर पर प्रस्ताव उत्तर देकर। इतिहास में कहा राष्ट्रीय कार्यक्रमों का महानायक करना राष्ट्रीय विश्व का अमन्त्रित है। उन्होंने देखा राष्ट्रीयता की भाषा है।

आयोजन के स्थापक भी 'बलदेव भाई शर्मा' ने अपने भाषा के प्रारंभ में राष्ट्रीय पुस्तक न्याय के प्रकाशन आयोजन को काम करने और कहा कि वे यह तथ्य से पूरा है कि पुस्तकों का महत्त्व नहीं रहा है। उन्होंने देखा राष्ट्रीय का जीवन और कर्म का महत्त्व है जिस पर पुस्तकों पर प्रकाश करने वालों का अनुभव कर गया। उन्होंने बताया कि प्रभास की उपस्थिति लोगों के साथ सीखना और विकास की प्रतीक बनाने के यह कार्यक्रम संरक्षित है।
पंकज सुबीर के उपन्यास ‘अकाल में उलझ’ पर विचार संगोष्ठी

लेखक ने अपनी उपन्यासीय भाषा में कहा ये कहीं तीव्र तत्वांशीय रूप से आचरण नहीं होता। काव्य में उपन्यास के दूसरे संकरण का विचार भी नहीं होता। हिंदी चित्त में महादेव मच्छर है और उसका धारण आकाश से आयोजित विचार संगीत की अवधारणा है। धर्म गोपियों के दरिया कहानी, उपन्यासकार श्री महेश कहाँ नहीं है और उपन्यास पर बीच सपना कहाँ श्री ब्रह्मा समस्तता तथा प्राणीज्ञान कहाँ श्री रामचं भी समस्त तथा श्री सिद्ध यादव ने अपने विचार रचियाँ।

उपन्यास पर चर्चा का हस्ताक्षर करते हुए श्री सिद्धार्थ यादव ने कहा कि उपन्यास का संकरण तथा ये बात विद्वान होती है कि जब भी पाठक गीत की वाक्यांश के दर्शन कायम रहते हैं। गीत के रूप में रचना की फिर का रूप में सुरु होते हैं। यह उपन्यास इस प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है कि इसके वर्णन समर्थ की एक बड़ी समय की अवस्था पकड़ने का है विशेष उसके मूल में जाने की और उसका हल तत्वांश की धारणें की है। छात्र निर्माण ने अपने विचार में कहा कि उपन्यास का संकरण पता लगाना पर इसकी भाषा है। यह उपन्यास की बातों, पुस्तकें, सोच करने और रचनाओं की भाषा में बात करना हुआ चलता है। विद्वान प्रोफ. रामनाथ ने अपने चर्चायों में कहा कि जब तीत पर जनवरी में गाना-बागड़े और पिकले दिनों से लेकर रोज छुटने बारी तिरुमलिनी के आलस्य का बनाये हुए उसहारे पत्रों के ज्ञान व्यवस्था पर नहीं करतीं जनमत संस्कृति और विधि दलों की। ‘अकाल में उलझ’ यह उपन्यास पर टिके रहे हैं। उपन्यास की रचना के लेखक की भाषा पर किया गया रोमांटिक प्रशांत है और वहीं लक्षण है कि इसमें कला कभी इस उपन्यास को इतनी लोकप्रियता प्रदान की है। काव्यात्मक का संपर्क करते हुए विज्ञान के संस्कार दर विशेष दर्शन ने जानकारी दी है कि उपन्यास को इस समय तक जड़ता है कि भाषा की नई साधन संस्कार कारण यह अनुभव होता है। जोम किसी विभिन्न भाषाएं ने न केवल इन्हें पता किया है कि अपनी साफ़तक प्रकृति की दृष्टि की है।

डॉ. रघुवीर चौधरी को ज्ञानपीठ सम्मान

पिलसे दिनों में भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने पुस्तक पर विरोध सक्षम कहानी के। रघुवीर चौधरी को 55वें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया। पुरस्कार दिन, 1985 को गोवर्धन पार राजनीति ने जनवरी में ही डॉ. चौधरी को वर्ष 2015 के लिए दी थी पुरस्कार दिन। इसके पश्चात 1977 में उन्हें उपन्यास ‘उम्राता’ के लिए काशीनाथ अकाल का पुस्तकालय निदेशक निधन किया गया। डॉ. चौधरी विद्याकालीन काल के हिंदी भाषा के अभ्यास पर शिखरी सुशंसक है। इसने पुस्तक के अभ्यास को स्वस्थ तथा विद्यार्थियों के कल्याण के लिए प्रतिष्ठा दिलायी। उन्होंने अभ्यास के लिए अनेक पुस्तकें प्रकाशित की हैं, जिनमें उपन्यास के अभ्यास की संस्कृति, नाटक, कहानी संग्रह और पत्रकारिता संस्कृति की विभिन्न शाखाएं शामिल है। उन्होंने भारतीय प्रेम पत्रकार के सदस्य समूह में भाग लिया। उन्होंने सभी पुस्तकें नामक ज्ञानपीठ के अभ्यास की दृष्टि में बनाए गए ग्रंथों के प्रति ध्यान दिया है। इसीलिए संस्कृति में समन्वय समर्थ में पुस्तकें के अभ्यास कंटेंट की नियम समावेश करने में विशेष अंशक विशेषता है।
घर से गली सुरक्षित

तेलुगु कहानी... अनुवाद : जी. परसेबार

पक्षी ही बंदर, लिंग पर ताक़ी का नज़ा. ऊपर से बिचकू का दंड।

ऐसी हालत में क्या गुलामी होगी उस पर...?

“वरलामा” के नाम से अधिक वरलामा की स्तिरता भी बिलकुल ऐसी ही थी। वरलामा फहरे से ही ही बीची. को मरिज है।

“बिचकू” का अर्थ नकली गायब। घर का काम-काज संभालना उसकी वजह की बात नहीं थी। समय पर नाक़ी-भोजन का प्रर्थ न होने के कारण नष्ठदिव नागर ठिकाना दफ्तर चले गए थे।... इन सब कारणों से वह दुखी थी।

बेटेरीज़ बेटे के पूर्ण अपने पाए श्रेयों से प्रेरण थे... बात यह है कि चार साल से बेकार बैठा बुड़ी संगत में पड़ने चिपक था। इस कारण वह पिलाता थी।

कुछ भालूया उसका पारा बहुत ही चढ़ा हुआ था, जिससे, रातों-रातों में जो पी चीज़ उसके पैर के सामने आती वह उससे बुरीसे बेला रही थी।

“दूसरे इसी समय गेट पर किंतु ने अपका...”

“सेवा, पूर्ण करो है, पूर्णी बत बात खिला दो, गैरचा?”

आकाश सुनते ही वरलामा नागिन-सी प्रकाशिती हुई देख की ओर दौड़ पड़ी।

“काहीँ रह। तेरी पूर्ण का कोई समय नहीं होता है क्या?” चीखती हुई-सी आगान.
में बालम्मा ने कहा और फिर बाल को आगे बढ़ाया— “बेहो! तुड़ा बचन बड़ा ही नहीं। क्यों तुड़ा बचन नहीं कर लेती हो?”

भीड़ गिराना ने बिंदुक गिराया है, उस लड़की के लिए इसी रूप से भी फिर गिराया जा रहा था। इसलिए उसने बड़े आगाम दे जाया दिया—

“मैं या! मूट के लिए भी कॉइ समय लेगी हो चुकी? हमने समय में बोला है कि इस काम को नहीं मिलता है जो समय में बुझ लगे हो!”

“कुछ के सामने भी...कहाँ तो बदले में वह भी...भी... हो कहाँ? बाल को बड़ी-बड़ी कहाँ हो। कुछ काम करके अपना पेट कम नहीं भरता!”

ऐसी बात की सुनकर ही भिड़पियाँ को कुछ नहीं बोलना चाहती है। लेकिन क्या करेंगे? वह जानती है गरीब का गुस्सा...खरबच का नुकसान। इसलिए उसने बिंदुक से कहा—

“बाल के पास कोई लड़की नहीं मिला जाएगा, तो यह नीचे काम करोंगे मैं तो...”

“बाल काम करना पड़े तो कुछ काम नहीं निकलेगा क्या?”

“न मैं...सफ़ुि...कोई काम ही नहीं देता। जाने दो। आय ही कई काम देखा खाना दे दीजिए न!” भिड़पिया ने कहा।

भिड़पिया ने उस गुड़सिंह की कहानी से बचने के लिए जो बाल के कहां, वह बालम्मा के लिए वरदान दान का हुआ। उसके गन में बोला जाया उठा। दस दिन से उसकी निरालाक थी। भीड़ भी है तो वहां तो दो अवसर ही अधिक है। तिसरे दिन वो पड़ने का उपहार पड़े ही नहीं गई है। यह नीचे काम करने को चाहती हो जाएगी। भरपूर खाना ले दिया तो पालू कुछ के नीचे काम पड़ने का डर चमके सामने।

“तुम्हारे काम करेंगे तो?”

“तो, तुम्हारे करेंगे मैं!”

“तुरंत यहाँ, हमारे घर में ही रहना होगा, क्या और अब जाकर होगा!”

“मैं कहाँ जाऊंगी मैं? न चाहना... न भासपा!”

“तो मैं नहीं।”

“तो मैं नहीं। भरपूर खाना भी मिल जाएगा। तो पैसे की जाति ही क्यों होती? तथा बड़ने के लिए कोई भुलाना कमरा दे दीजिए...बत!”

बालम्मा ने आपने कुछ नहीं सोचा, वह इस छुट्टी ही सोचा कि अपना तूफान हयात हुआ है। सकारात्मक में देर बसना अच्छी बात नहीं होती है। वह भिड़पिया को हटाकर सीतारा ले गई। रात का बचा-बचा खाना उसे भरपूर दिया। गौंडे हुए, अपने, गौंडे जाने वाले बच्चों के साथ-साथ ऐसी-ऐसी बस्तियों भी उस लड़की से दुखाया करते ही न तो भी गिरने की जतला थी, न कुछ ठहराने की ही।

“सामने रहने की दौर साफ़ कर ले। रात को बड़ी सो जाना। अरे! मैं भी बड़ी गुलशाबड़ हूं। तेज़ तो नाम ही नहीं पूछा। तेज़ नाम भी है री...?” बालम्मा ने गुम्पा।

“पारिता कहों हैं भी!”

पारिता का नाम भी बड़ा अच्छा है। गन में सोचते हुए— “इंदिरा हूं...इंदिरा हूं... पहले अपना काम देखा” बालम्मा ने आदेश दिया।

पारिता बाँसे से सीधे कपड़े की ओर जाती हुई लोहे सतही, जो बुझ रही रहा है, वह तब है कि सपना। उसका भी गिराना के लिए अलग, गुड़सिंह द्वारा पारिता मां... काम की जाना होता और उसके इसके काम पर रखा लेना...किस्मत की आवश्यक की है।

तान के किनारे काम क्या होने पर भी गन का बड़ा सुख मिल रहा था, पारिता की।।

दर-दर महीने तुरंत विदेश में चल जाना, पेट भरने के लिए। भरपूर मिले न मिले पर इसने तो मिला जाता कि चुनौती को भी नहीं होता।।

प्रेम की वजह से जब भी मिले के साथ-साथ युवा होते ही नहीं, तान भड़ने के लिए अच्छे मजे भी मिल गए थे। इससे बड़ा और बच्चे का घर बनाने की?

पारिता का रंग नींद था। गौंडे बचने, मूसल अर्क बाली सुइर वड़ते थी। बियान स्नान के अन्यथा थे, उसके-कूलरे कहारे के कारण वह बालों की ओर में चौंद-सी थी।

यहाँ आपस्क रहने का विषय, और शरीर से बचने की गरीब निश्चल बाला बाला थी। वह कोई भाग नहीं कर सकते थे तदस्वक उसके दिविष्य आए थे।
थी पर आकर्षण में कोई कभी नहीं था। बालकमा ने ऐसी पापामा में रथी सादृश्य देखा, वहाँ उसमें यह सुंदरता... और आकर्षण का अनुभूति भी देखा। उसके कारण लिखा है।

नौकरी की प्राप्ति सुहावुसक से अपने लिए होने वाले लाभ-हानि की तुलना की। हानि की तुलना में रात्रि ही अधिक दिन दे रहे थे। उन्हें उसने अपने गन को मना ही लिया।

बेचारी बालकमा की आव्यूहकला ही ऐसी थी। आम के जब उनके पत्ते पर लीटी तो पत्ती को देखकर बे आव्यूहकला रह गई। पत्ती को बेचने पर न कहीं तबका कर नहीं आयी थी, न ही रिद्विक्रिया। उन्होंने बड़ा सबसे हुआ और पत्ती से उसका ज्ञान पूरा हो लिया— "पता बाट है, हिलती ही की तरह हुआ नज़र आ रही हो? नौकरी की आगेवर बाटा।"

बालकमा पूछी नहीं समझ रही थी। पती का प्रथमसंसा के कारण नहीं। सबसे उनका पता जो चढ़ या था, वह अब पूरी तरह से उतरा हुआ था।

उन्होंने पत्ते से उत्तर प्राप्त किया, "अब तो समझ में आया न। दिन भर तहत की तरह बनाया हुआ काम करने पर काम तक आयी के क्या हलत होती है? और दिन भर आया से बैठे रहने पर बेहतर नहीं होता है?"

"हाँ... अपनी नौकरी है। बालकमा ने कहा।

"अभी...अन्य...! कितने दिनों के बाद ऐसा सबूतिकार तरी दिशा में आया।" पता ने कहा।

"क्या नाताप?" बालकमा की आवाज में सर्दी की भावना सपना प्रतिविदित किया।

"हाँ-हाँ, कुछ नहीं। कुछ नाताप वास्तव का वहाँ है। दस्तर के लिए देर हो रही है।"

पापमा अपने तक नहीं बढ़ी थी। गला में आ रही है।" कहते हुए बालकमा पता को नाताप पत्ती में लग गई। नाताप तो वह पता रही थी, लेकिन उसके मन में रात कहाँ दोहरात्मक विचार उभर हो रहे थे...।

पता के दस्तर के लिए निकलते ही युवा ने करने में प्रेषण किया।

उसने मां से पूछा... "अपने घर के
स्वातंत्रकर डॉ. आनंद पवार (मई, 1951—जून, 2016) हिंदी व अरबी भाषा में एम.ए. और डॉ. विषयों में यो.एच. तथा एलएल.बी थे। वे सन 2011 में मध्य प्रदेश विद्यालय के मुख्य सचिव के पद से सेवानिवृत्त हुए। डॉ. पवार स्वास्थ्य व शिक्षा विभाग के अधिकारी व न्यायिक कार्यों में भाग लेने में बड़ी भूमिका निभाते हुए रहे हैं, वहाँ विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान अनुभव करने के कारण उनके जीवन में विशेष अंतर का उत्कृष्ट प्रभाव हुआ। उनकी चर्चाएं, लेखन, विश्लेषण आदि विभिन्न क्षेत्रों में स्थायीता प्रदान करधी चौथिये।

लागत करेबा में चोट
संस्कृति की चर्चा करते समय अक्सर एक ग्रंथ का भाव व्यक्त होता है, क्योंकि इसके प्रभाव तथा चर्चा समाज की विकासकालीन विश्वास का कोमा होता है। इसका अर्थ है कि यह समाज के अंतराल में जनगणना-निर्भरता का व्याख्या किया जाता है जल्दी ज्ञात हो चुका है। संस्कृति के रूप में किसी भी चीज को अपनाने के रूप में मानना गिनती है।

तंत्रिक जाति को शाश्त्र संदेश देता प्राचीन ग्रंथ
तंत्रिक ग्रंथ का महत्व का तंत्रिक ग्रंथ का बारे में है कि वे इससूची 30 से 200 वर्ष के बीच हुए। यहाँ संयोग की बात है कि वाल्मीकि की तरह इसका जन्म भी एक दलित परिवार में हो गया था। यहाँ मानना है कि वे चौथे के मध्यकाल से अंतराल जाति में भी धर्म अपनी जीवन में बीता।

शर्म, वैभव, बैठा तथा जैन सभी तंत्रिक ग्रंथ को अपना मातृवाड़ी बनाते हैं, जबकि अन्य रचनाओं से ऐसा कोई आभास नहीं मिलता। यह अवस्था है कि वे उस परिस्थिति में विश्वास रखते थे। उनका विचार था कि मनुष्य गुण रहते हैं और परमेश्वर में अनुभव का अंतर्गत है। इसका अर्थ है कि तंत्रिक ग्रंथों का बारे में है।

बैठक में चोट
संस्कृति की चर्चा करते समय अक्सर एक ग्रंथ का भाव व्यक्त होता है, क्योंकि इसके प्रभाव का चर्चा समाज की विकासकालीन विश्वास का कोमा होता है। इसका अर्थ है कि यह समाज के अंतराल में जनगणना-निर्भरता का व्याख्या किया जाता है। वैश्विक विश्लेषण का रूप में किसी भी चीज को अपनाने के रूप में समाज अक्सर उसके अवधारित और अप्राप्त पहल पहल का अनुभव नहीं करता—सार-सार को महत्व नहीं, बैठक देखा जाता है—तो यह यह निर्णय नहीं करता और निर्णय का अर्थ नहीं है।

पुस्तक संस्कृति
54 | जुलाई-सितंबर 2016
यह काम विरासत-निर्माण की जितल प्रक्रिया को सीख-सहयोग पारदर्शन करने से नहीं हो सकता। इसलिए गहन विबंधांकन करना पड़ेगा। समाज की संबंध-संस्था और बालक का प्रगति समर्थन बैगर हम अपनी संस्कृति और विरासत के सही सुदृढ़ चरणों को पहचानने से ही समझ सकते हैं।

प्रक्रिया लॉकडाउन मूलतः पहले ने भारतीय संस्कृति के खूबसूरतों की खोज-खबर तो है और बताता है कि जिन अनेक संस्कृत-सांस्कृतिक परम्पराओं का प्रारंभ-वादन लम्बा है 'वाह-वाही' करते नहीं अवशोषित, उन्हें अपनी संस्कृति-सांस्कृति के सिलसिले में विनम्रता उपेक्षा, आयाम और समर्थन देना पड़ा है। राज-समाज की वर्तमान स्थिति ने अपनी पुराण प्रमाण कथा को बनाए रखने के लिए ली-की निरंतर आयाम और अयोग्य पोषण किया। गौर कुमार जाना है यह बैगर साहस, गौरवात्मक है या गंभीर दृष्टि, उसे माना जाता है। राज-समाज की इस विदेशिय की आप के बीच से होकर विकल्प देना पड़ा। ऐसा नहीं कि इस कलाकारों की जीवन-दौरा और शोरंग का मिला-वह तो मिला, पर नहीं मिला तो वह समाज, वह प्रतिष्ठा, जिसली वे स्वभाविक अधिकारियों थे। फिर उनका यह खुला बताया तो सीखना नहीं था। युग तो गुरु, खुद उनकी समयसमय में साहित्य भी उन्हें दिखाता नहीं देखी थी। मूर्ति जी ने लिखा है कि वह भी लोग (बहुत मेहेंदी और तपस्यावादी लोगों के साथ) अपने अभियान का बिंदु-बिंदु से ही अवशोषित करने का प्रयास किया। इसलिए रोज़-सपना का अनुभव और सामाजिक मानवार का लाभ आयोजित और कोरा का अनुभव निभाया नहीं जाता है। उन्होंने बताता है कि इस संस्कृति सातवाहन को एक और सांस्कृतिक ग्रामीण का अयोग्य और सार्थकता करने की स्वाभाविक विमेधियों के लिए हिस्से और हिस्से अपने ही स्वयं की विस्मय और एकता के संदर्भ का संदर्भ साधन राज और समाज की संतति आती नहीं और सातवाहन का अनुभव सातवाहन नहीं जाता है। उन्होंने बताता है कि इस संस्कृति सातवाहन को एक और सांस्कृतिक ग्रामीण का अयोग्य और सार्थकता करने की स्वाभाविक विमेधियों के लिए हिस्से और हिस्से अपने ही स्वयं की विस्मय और एकता के संदर्भ का संदर्भ साधन राज और समाज की संतति आती नहीं और सातवाहन का अनुभव सातवाहन नहीं जाता है। उन्होंने बताता है कि इस संस्कृति सातवाहन को एक और सांस्कृतिक ग्रामीण का अयोग्य और सार्थकता करने की स्वाभाविक विमेधियों के लिए हिस्से और हिस्से अपने ही स्वयं की विस्मय और एकता के संदर्भ का संदर्भ साधन राज और समाज की संतति आती नहीं और सातवाहन का अनुभव सातवाहन नहीं जाता है। उन्होंने बताता है कि इस संस्कृति सातवाहन को एक और सांस्कृतिक ग्रामीण का अयोग्य और सार्थकता करने की स्वाभाविक विमेधियों के लिए हिस्से और हिस्से अपने ही स्वयं की विस्मय और एकता के संदर्भ का संदर्भ साधन राज और समाज की संतति आती नहीं और सातवाहन का अनुभव सातवाहन नहीं जाता है। उन्होंने बताता है कि इस संस्कृति सातवाहन को एक और सांस्कृतिक ग्रामीण का अयोग्य और सार्थकता करने की स्वाभाविक विमेधियों के लिए हिस्से और हिस्से अपने ही स्वयं की विस्मय और एकता के संदर्भ का संदर्भ साधन राज और समाज की संतति आती नहीं और सातवाहन का अनुभव सातवाहन नहीं जाता है।

भोग संस्कृति के विकास से संकट में है धर्ती
भारतीय जापानी की पहचान प्राप्त सत्ता का सवितारह प्रक्रिया का स्वरूप है। भारतीय जापानी की पहचान प्राप्त सत्ता का सवितारह प्रक्रिया का स्वरूप है। भारतीय जापानी की पहचान प्राप्त सत्ता का सवितारह प्रक्रिया का स्वरूप है। भारतीय जापानी की पहचान प्राप्त सत्ता का सवितारह प्रक्रिया का स्वरूप है। भारतीय जापानी की पहचान प्राप्त सत्ता का सवितारह प्रक्रिया का स्वरूप है।
है कि हम भले ही प्रकृतिक आपातकारों के लिए किसी अनुभव शक्ति को देख दें, लेकिन वास्तव में यह इंसान की ही गतिविधियों का परिणाम है। संस्कृतियों में अनुभव मिश्र, देशाधिकारी, गृहाधिकार, व्यायाम कृषि गाँव, जनपद, चैनाल और आत्मनिर्भर प्रभाव के कुल 11 आलेख हैं। संस्कृति के संपादक शाक्तीसे मंत्रों की सूची तथा किस का अधिक होता है। इंसान जीवनकाल-से अपनी दुनिया बदलता रहता है। इसी तरह भी शरीर और मन का चाहकर भी ऐसी आपात से निकलने की तयारी कर नहीं सकता। अन्य नौ, हादरत या सुगंधी बातें के कुछ ऐसे नए नाम हैं जो माननका के लिए व्यवहार बनें हैं। संस्कृतियों में भूमिका पर चार आलेख हैं जो कि बताते हैं कि भूमिका के कतार नहीं रहे बल्कि भूमिका पर सटीक ज्यादा भाषा रहें हैं। हमें इंसानीय संबंधों को पूरा किया है जो आसमान को छिन्न कर दिया है। भूमिका उसकी वजह से आते हैं या न आते हैं, हमें इस वजह से गर्बित बने विनाश के अवसर रास्ते दोहराए दिये गए हैं।

बदलता मौसम, धरती का बदलता तापमान क्षण तहत से घटती पर इंसान के अधिकारों के लिए जरूरत है और यह लाभ निर्मित करने में इंसान की विकास-गाथा करता है जिन्हें निर्माण करते हैं। सूर्य ने इंसान के जीवन को निर्माण करता है, इसका अर्थ नाम है। भूमिका ने समय बिताने का विश्वास बनाने के लिए आवश्यक खाता उसे हिस्सा का उलेख है जोहाँ समय ने अपने बलसूते पर बाद को निर्माणित किया।

अंत में, जल संकट, जंगल कम होने या फिर भूकंप, सुनामी और विभिन्न घटनाओं के आपातकारों के मामले में खूब से अधारण तब से अपनी नियंत्रण से पता चलता होगा। आपातकारों के अनेक कारों को हारी जीवन-संरचना से सीधे जुड़ा है, जिसके कारण प्रकृति का संवरण घटाया गया है। इंसान ने इंसान के जीवन के निर्माण निर्माण करने के लिए प्रयास किया है जो जीवित बनाने का काम करता है। इसका मतलब यह है कि जीवित बनाने का काम है जो जीवित बनाने का काम है। जब भूमिका के अनेकांश जीवन संरचना और वैद्यविशिष्ट उत्साह के लिए सहायता करता है। इस बात की है कि जीवित बनाने का काम है जो जीवित बनाने का काम है। इन विषयों के इन विषयों के इन विषयों के इन विषयों के इन विषयों के इन विषयों के इन विषयों के इन विषयों के इन विषयों के इन विषयों के इन विषयों के इन विषयों के इन विषयों के इन विषयों के इन विषयों के 56 जुलाई-सितंबर 2018
एवं ऐतिहासिक पुष्पमूल, पदविवाह के विषय प्रवास के आसपास के देव सत्ता, यहाँ पर ऐतिहासिक घटनामार्ग, कुंभ पर बाँध पीठिका, उसके अनेक अनुसार घटनामार्ग, पुष्पमूलों के आर के इसके संदर्भ देख लेते हैं। इसके बाद पुटकार के अंग हमें यह तथा उपलब्ध होते हैं, जो पात्र के लिए सर्वोच्च क्रियान्वयन का कार्य बनाते हैं। आर शंकरसारण के प्रवासी तथा अखंड परंपरा का संबंधी तत्त्वांशिक धार्मिक मानक जो कि एक विशिष्टता के लिए कार्य बनाता है। यह ऐतिहासिक तथा सामान्य विषय के लिए निर्देशकों का कार्य बनाता है। शंकरसारण एवं प्रवासी तथा अखंड परंपरा के प्रवासी तथा सामान्य विषय के लिए निर्देशकों का कार्य बनाता है।

शंकरसारण के विषय प्रवास के आसपास के देव सत्ता, यहाँ पर ऐतिहासिक घटनामार्ग, कुंभ पर बाँध पीठिका, उसके अनेक अनुसार घटनामार्ग, पुष्पमूलों के आर के इसके संदर्भ देख लेते हैं। इसके बाद पुटकार के अंग हमें यह तथा उपलब्ध होते हैं, जो पात्र के लिए सर्वोच्च क्रियान्वयन का कार्य बनाते हैं। आर शंकरसारण के प्रवासी तथा अखंड परंपरा का संबंधी तत्त्वांशिक धार्मिक मानक जो कि एक विशिष्टता के लिए कार्य बनाता है। यह ऐतिहासिक तथा सामान्य विषय के लिए निर्देशकों का कार्य बनाता है। शंकरसारण एवं प्रवासी तथा अखंड परंपरा के प्रवासी तथा सामान्य विषय के लिए निर्देशकों का कार्य बनाता है।

सूरीनाम की गहरी पड़ताल करता ‘टिन्नमूल’

टिन्नमूल का मतलब जो ज्ञान या रखता दिया गया है। इसी उद्देश्य के लिए की गई की गई की वर्तमान के सामाजिक तथा सांस्कृतिक अध्ययन.

उपन्यास के बहाने पुष्पमूल ने सूरीनाम की पूरी गहराई लिख इसे रिसर्च रहे हैं।

हालांकि एक उपन्यास में बहुत सारे विषयों को मिलाकर मानने की कोशिश में कहीं-कहीं विश्वास बनावट की तपत जाता है, लेकिन फिर से मूल दृष्टि पर आर के खिलाफ इसे बाहर निकलने में कामयाब हो जाता है। इससे बाहर निकलने के लिए रोहित को बाहर निकलने के साथ साथ उसके प्रति रोहित की विश्वासगत, संगठित, सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितियों की उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के लिए उपयोग के
गुलमुक्त "तिममूल" के पढ़कर यह महसूस होता है कि जैसे नायिका ललिता की जगह छुट्टी खोई है और वह सब उनका ध्यान-भोगा सब है। सूरीनाम में भारतीय जंजिंगी को जानने-समझने की दिशा में यह उत्पन्न का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज कह सकते हैं।

अटल बिहारी वाजपेयी
की कायद-चेतना
-एक संप्रभुभी पुलक

युवा पत्रकार और चर्चित समालोक डॉ. अरुण कुमार भागत द्वारा संप्रभुभी पुलक कृति है - "अटल बिहारी वाजपेयी की कायद-चेतना"।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री और सूक्ष्म अटल बिहारी वाजपेयी के कृतित्व पर संभाग: यह अपने तरह की एक बिश्वस्त समालोकायक पुस्तक है।

इसमें अटल बिहारी वाजपेयी की कायद-चेतना के भिन्न आयामों पर हिंदी में 16 सालाना न्यूज़ दिवस प्रकाशित की गई है।

समीक्षक: दृष्टिनंदन सूरीदेव
‘अटल बिहारी वाजपेयी की कायद-चेतना’
संपा.: डॉ. अरुण कुमार भागत
पुस्तक प्रकाशन, नई दिल्ली
पु. 208
मानिस का संगम सहज ही सुलभ हुआ है। डॉ॰ भगत की रचनाओं में साहित्यिक, सामाजिक एवं प्रामाण्य वैज्ञानिक संगम भी अपने शुरुआत साहित्यिक भाषा में सृती है। तथा भाषा नीति भी वही है, काल न बदल, भगत जी ने अपनी रचनाओं में साहित्यिक क्षेत्र में अपने विशिष्ट रहस्य उपन्यास की है।

इस पुस्तक के माध्यम से भाषा की अद्वितीयता का सामना हम गर्वसन्धित हुआ है। विशेषतः कला-बैठक से समापित मुद्रा जो एक सफल राजनीति के साथ-साथ सबसे अच्छी में मनोकामना कर्तव्य भी हैं। उनमें कलम क्षेत्र तो हैं, कलिन खशीत भी है। साहित्य-शास्त्र की दृष्टि से उनकी काव्य-भाषा सामान्य है, सार ही सामान्य आचरण के प्रतिनिधित्व हैं उनके शब्द।

भाषाकर्म की दृष्टि से उनकी कविताओं में अध्ययन के अनेक तत्त्व निहित हैं।

डॉ॰ अर्जुन कुमार भगत द्वारा संपादित इस पुस्तक के माध्यम से उल्लेख जी की कविताओं का भाषाकर्म भी खारिज हुआ है। भाषाकर्म का सीमा संबंध भाषाकर्म क्षेत्र से है। इस दृष्टि से कलमत्व जी की काव्य-भाषा में प्रजन्य वैचारिक तो है, प्रयोग-प्रौद्योगिकी में भी है। कला-तत्त्व की दृष्टि से कलमत्व जी की कविताओं का साहित्यिक सीरीज अपना विविध मूल्य आपत्ति करता है। यह पुस्तक इस स्तर के रूप में पूरी तरह सही है कि उसने जी अपनी काव्य में भाषा का गहनता निविवृत् किया जा गया है।

पुस्तक के माध्यम से उल्लेख जी की कविताओं में सांस्कृतिक राजनीति, मानवीय ध्वज, आधार वैज्ञानिक, साहित्यिक वैज्ञानिक, व्यवसायवाद, कृति-विज्ञान, राजनीतिक वैज्ञानिक, वैज्ञानिक-वैक्यता, आम संघ, अर्थतः गौरवहीन और विविध प्रतीक्षा की विविधता किया गया है।

मानिस की अद्वितीयता जी उल्लेख जी के कविताओं ने केवल काव्यशास्त्र अपना नीचे वांछित भाषाकर्म की दृष्टि से भी आयोजित है। काव्य-संगीत के विविधकर मूल तत्वों में दर्शाया है, अधिकार की चर्चा, व्याख्या का चर्चा, भाषा की गहनता, सामाजिक कल्पना, द्वारा रूपांग विषय संरचना सुधार है।

इस पुस्तक में डॉ॰ दमनकुण्ड विविधता निषेध, डॉ॰ शहीद बनर्जी, डॉ॰ देहीरा रादूक, आचार्य निर्मलांकुण्ड, डॉ॰ अमरसिंह मिश्र, डॉ॰ नंदकृष्ण बंसर विविध, वैदेश भाई भार्य इत्यादि के श्रेष्ठ अलेख हैं, जो उच्च कोटि का समाजवाद की की क्षेत्र में पक्षपात करते हैं।

कविता का महत्व से मिलत रहती है। उल्लेख जी जैसे विधाता कवि इससे मुख्य विद्या देते हैं, जिन्होंने राजनीति-वश्वक अभाव जीवन-पता की आशंका सत्ता का अभाव मानने वाली, भावना का प्राकृतिक विषय लूबत कविता के माध्यम से किया है। इसलिए उल्लेख जी जैसे कवि श्रेष्ठ का काव्य-समाज मानव-संस्कृति का अविकल उदात्त और अद्वितीय तथा काव्य-प्रगति के प्रयोग के स्तर में सर्वस्व नयी निषेध के रूप में लोकसमावेशी भाषा है, जिसका जीवंत उद्धरण इस पुस्तक में किया गया है।

प. दीनदयाल उपाध्याय बोला रहा है।

में दीनदयाल उपाध्याय बोला रहा है।

संपादन: विश्वेन्द्र सेन

प. दीनदयाल उपाध्याय

भाषा: विश्वेन्द्र सेन

पृ. 193: व. 250
पं. दीनदयल उपाध्याय को जो लोग "पालकपति" के जनकवाद और गार्हस्थ, राजस्व प्राप्तवेदिक के संस्कारक और संबंधक, राजस्वीकरण के ज्ञानी ब्रह्मचारी और "जनसंघ" के संगठनकर्ता रूप में ही जाना-माना जाता है, इस पुस्तक का प्रकाशन उनकी विचार और गति परिवर्तन हो जाना है साहित्य संस हण लगा है।

पं. दीनदयल उपाध्याय के भवन में लिखा है, "मेरा दीनदयल उपाध्याय का ज्ञान, उनकी विचार और उनका भवन में ही जाना-माना जाता है।"

पं. दीनदयल उपाध्याय का दीनदयल उपाध्याय के भवन में लिखा है, "मेरा दीनदयल उपाध्याय का ज्ञान, उनकी विचार और उनका भवन में ही जाना-माना जाता है।"

पं. दीनदयल उपाध्याय का दीनदयल उपाध्याय के भवन में लिखा है, "मेरा दीनदयल उपाध्याय का ज्ञान, उनकी विचार और उनका भवन में ही जाना-माना जाता है।"

पं. दीनदयल उपाध्याय का दीनदयल उपाध्याय के भवन में लिखा है, "मेरा दीनदयल उपाध्याय का ज्ञान, उनकी विचार और उनका भवन में ही जाना-माना जाता है।"
युवा आलोचक की प्रतिष्ठातिति

युवा आलोचक राजीव रंगन गिरी की पुस्तक ‘आठ’ हिंदी साहित्य के पाँच और प्रवक्ता का एक नयीन माना जाता है। इसके कारण यह आलोचना और परिवर्तन का निवास करता है और नए दृष्टिकोण खोजता है। इसके कारण यह आलोचना के पाँच और प्रवक्ता का एक नयीन माना जाता है।

बाद-विवाद संबंध की पूर्ण परिपथ के अनुसार, यह पुस्तक भाषाकीर्ति भविष्य-आलोचना से लेकर साहित्य-विद्वानों का स्वाभाविक संबंध रखती है। यह पुस्तक हास्य-विशेषता है, जिसके फलस्वरूप, इस पुस्तक की भाषाविद्या की स्वतंत्रता पर संक्षेप में सीखे हैं और इसका उपयोग किया जाता है।

अध्ययन के संदर्भ में, इसके तत्वावधायक सारणिक के लिए ज़िंदगी का जिविंदा किया जाता है।

पुस्तक के दूसरे लेख में, राजीव ने भवानी सिंह की पुस्तक ‘आलोचक और तुलसीदास’ पर विवाद करने के बाहर आलोचना के अवधि और उच्चता के खंडों को उल्लिखित किया है। इसका आधार है कि आलोचक किसी भी संबंध में यह उसकी साहित्यात्मक दृष्टिकोण उसके आलोचनात्मक विवेक से अधिक उनकी अनुभूति को दर्शाता है। उनके आलोचना और प्रकाश में अपने बच्चे के प्रथम वर्षों के प्रश्नों को उल्लिखित किया है।

पुस्तक के अंत में, राजीव ने भवानी सिंह की पुस्तक ‘आलोचक और तुलसीदास’ पर विवाद करने के बाहर आलोचना के अवधि और उच्चता के खंडों को उल्लिखित किया है। इसका आधार है कि आलोचक किसी भी संबंध में यह उसकी साहित्यात्मक दृष्टिकोण उसके आलोचनात्मक विवेक से अधिक
एक हंस सुनून

म. संता सीतारती
अंग्रेजी अनुवाद:
म. युध्म जिलोक
मूल रिवेड में हिंदी में छोटी कहानियों के रूप में व्यक्ति हृदय पर ही अंग्रेजी
अनुवाद। पुस्तक का लेखांक अदरक आकर्षण है।
समय प्रकाशन
भारतपुरी, नई दिल्ली 110064
पृ. 176, र. 399.00

कुमारी की बालोली: सल्ट

तेजस्वी उपाध्याय
तेजस्वी के सल्ट के हस्तक्षेप का मालिक की कहानियां में बड़ा बोध रहा है। मालिक की लघु कहानियां इसे 'कुमारी की बालोली' कहा गया है। यह पुस्तक बच्चों के लिए खास जरूरत का तेज-पतला है।
उत्तर कुशी
भारतपुर, नई दिल्ली-110085
पृ. 96, र. 199.00

कथा हाल झुनवों

मोहन सेधव
प्रसिद्ध कवि, नाटककार,
मोहन सेधव की निधानरथ
किताब अंग्रेजी में प्रकाशन
dरामनाथ, नई दिल्ली 110002
पृ. 216, र. 399.00

कुमारी का चौथा संग्रह

संवैज्ञानिक वास्तविक 'संग्रह'
समाज में व्यक्ति विचारधाराओं और
dिवसभागियों पर देखा करते
d50 कहानियों का संग्रह
प्रेम ज्योति
गुडश दरियागंज, नई दिल्ली 110002
पृ. 168, र. 290.00

मोहन से महामाय

मोहन सेधव खेलपंडे
आदर्शवाणी की विद-प्रदिपत
आदर्श द्वारा लिखित गाँव कहानियों का संग्रह। श्रीमान् मन से इस
dिवस से पहले बना कन्हैया पुस्तक है।
dरिकांड, नई दिल्ली-110052
पृ. 112, र. 120.00

पुल्ला-गोदा

कुमार एनका
यह नवन नाम भी नहीं है। दफ्तर विद्वाने के
dिवस और उन्होंने संगीत से रामनाथ से
dिवस उनके द्वारा होने वाले।
dिवस रामनाथ दरियागंज, नई दिल्ली-110002
पृ. 872, र. 550.00
बच्चों की पुस्तकों के चित्रों के जादूगर : जगदीश जोशी

क अंग्रेज विद्वान ने कहा है कि, ‘केन हार्ट इज़ पुत्त, बच्चों आर स्पेस’ अब तु जब बिला मरा होता है तो तब शाय
द्र नहीं मिला। बच्चों के लिए कहानियों को अपने रंग और रूपों से जीवंत बनाने वाले श्री जगदीश जोशी को श्रद्धांजलि अभिषेक
करते हुए सुधे वैदा ही लग रहे है। बाल सन्
2000 की है। वह उन दिनों चिल्ड्रस बुक ट्रस्ट
में काम कर रही थी और बच्चों की किताबों
पर उसी के बनाए चित्रों का जादू देखती
थी। बाल पुस्तकों की सफलता बहुत कुछ
उसके चित्रों पर निर्भर करती है क्योंकि
आकर्षकता चित्रों से सजी पुस्तकों के बच्चों का
आकर्षण पाता अति और खुसी हैं और
जोशी जी के बनाए चित्र शायद और ध्यान
बनकर उम्मेद थे। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के
मैं उनकी जीवन यात्रा के बारे में जाना।
जोशी जी का जन्म कुछ जुलाई 1937 को
उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में हुआ था।
उनके पिता बाबा के गीता ग्रंथ में काम करते
थे। वहाँ से प्रकाशित धार्मिक पत्रिका
‘क्लायण’ में पौराणिक कथाओं पर आयात

कुसुममलता सिंह

50 से अधिक पुस्तकों की लेखिका,
‘कथासाहित्य’ पत्रिका और ‘पारद’ वैष्णविक
पत्रिका की संपादक।

वरिष्ठ बाल साहित्यकार, स्वतंत्र
लेखक, संपादक।

लंच समय तक चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट के
संपादकीय विभाग में बतौर सलाहकार
लगा।

संपत्ति:
kusumratsarballia@gmail.com

लिए तो उन्होंने कई पुस्तकों को सिंह उसके चित्र भी बनाए, जिनमे पत्रिका है—
कहानी पहचानाओ, पुत्र, पहली आदि।

जोशी जी कहता कम बोलते थे और
बेहद समकालीन प्रौढ़ता के थे। खुद के बारे में
तो बहुत ही कम बोलते या बताते। संयोग से
एक बार उनका मेरे पर जाना हुआ और तब
चित्र बने होते हैं। बचपन में जोशी जी को वे
चित्र बहुत आकर्षित करते। उन्होंने तप
किया कि ज.e. राम आदि में जाएगी
और चित्रों को अपना प्रथम बनाए। पर
एक परिवारिक भी श्री बी.के. मिश्रा के
मन करने पर वे कोकलता चले गए। जहाँ
उन्होंने विद्वान के विषय को संक्षे
भारत कभी भी पराजीन नहीं रहा –बलदेव भाई शर्मा

'भारत एक साधारण संघ और परम्परागत भारतीय रूप से है और कभी भी कोई भी शासक इसे दूरी तक पराजीन नहीं कर पाएगा, क्योंकि समूह देश में हर क्षेत्र में कहीं भी स्वतंत्रता के लिए झगड़ा चल रहा है।' इस विचार के आधार पर बलदेव भाई शर्मा ने 1957 की आमने-सामने को अवलोकित किया जिससे देश को पुराने स्वतंत्रता संग्राम के लिए निश्चित हो गई।

बलदेव भाई शर्मा का जीवन और कार्य भारत की स्वतंत्रता के सूत्रपट के रूप में हिस्सा रहा। उन्होंने अपनी जीवन और कार्य के माध्यम से देश को पुराने स्वतंत्रता संग्राम में सहयोग किया। उनके सवाल-जवाब के माध्यम से देश के स्वतंत्रता संग्राम में सहयोग किया। उनका ध्येय था कि देश को पुराने स्वतंत्रता संग्राम में सहयोग किया। उनका ध्येय था कि देश को पुराने स्वतंत्रता संग्राम में सहयोग किया। उनका ध्येय था कि देश को पुराने स्वतंत्रता संग्राम में सहयोग किया। उनका ध्येय था कि देश को पुराने स्वतंत्रता संग्राम में सहयोग किया। उनका ध्येय था कि देश को पुराने स्वतंत्रता संग्राम में सहयोग किया। उनका ध्येय था कि देश को पुराने स्वतंत्रता संग्राम में सहयोग किया।
प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना
आपका बैंक खाता - आपकी सुरक्षा का आधार

<table>
<thead>
<tr>
<th>लाभ की सारिशी</th>
<th>बीमा राशि</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>मृत्यु</td>
<td>2 लाख रुपए</td>
</tr>
<tr>
<td>पूर्ण तथा दोबारा ढीक न हो सकने वाली दोनों आंखों की हानि या दोनों हाथों या पैरों के प्रयोग की हानि या एक आंख की रोशनी की हानि तथा हाथ या पैर के प्रयोग की हानि</td>
<td>2 लाख रुपए</td>
</tr>
<tr>
<td>पूर्ण तथा दोबारा ढीक न हो सकने वाली एक आंख की रोशनी की हानि या एक हाथ/एक पैर के प्रयोग की हानि</td>
<td>1 लाख रुपए</td>
</tr>
</tbody>
</table>

व्यक्ति के बवत खाता धारकों के लिए
प्रति व्यक्ति न्रीक्ष रु12/-
18 से 70 वर्ष की आयु के लिए
dुर्घटना के कारण विकलांगता या मृत्यु होने पर 12 लाख तक की बीमा सुरक्षा

योजना 1 जून 2016 से पुनः लागु है।
कृपया अपने बैंक से सम्पर्क करें।

जनतिन में जारी

ओरियनल इंश्योरेंस
(Govt of India Undertaking)

पंजीकृत कार्यालय: "ओरियनल हाइजस", प-25/27, असागर अली नगर, नई दिल्ली-110 002
वेबसाइट: www.orientalinsurance.org.in, डिलर की नं. 1800 118 485
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संस्था है, जोकि पाँच दशकों से अधिक समय से पुस्तक प्रकाशन व ज्ञान के प्रसार के क्षेत्र में सक्रिय है। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा अभी तक 32 भाषाओं में 17,000 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है, जिसमें हिंदी, पुरातत्व तथा अन्य भारतीय भाषाओं व अंग्रेजी में अनुवाद शामिल है। न्यास विदेशों में भारतीय पुस्तकों के प्रोन्नयन और भारत में पुस्तक संस्कृति के प्रसार के लिए केंद्रीय अभियंता के रूप में भी कार्य करता है।

आपको यह जानकार हमेशा होगा कि राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा एक साहित्यिक तत्वावधारक पत्रिका ‘पुस्तक संस्कृति’ का आरोपित किया गया है। पत्रिका का प्रकाशन जनवरी-मार्च में आ चुका है। पत्रिका का दूसरा अंक अप्रैल-जून 2016 शीर्ष प्रकाश है। इस पत्रिका में आपको उल्लंघन रचनाओं की बारीक व्यवस्था के लिए आपको विज्ञापन आयोजित किए जाते हैं। पत्रिका में लिख कर पढ़ने वाले विज्ञापनकार को दर निम्न प्रकार रखा गया है:

- दूसरा कवर पेज (रंगीन) 10,000
- तीसरा कवर पेज (रंगीन) 8,000
- चौथा कवर पेज (रंगीन) 20,000
- अंदर का पूरा पृष्ठ (रंगीन) 5,000
- आधा पृष्ठ (रंगीन) 3,000

(अयोग्यता वाश में किसी प्रकार की छूट दिए जाने का प्रकाशन नहीं है)

पत्रिका का आकार - 19.7x27.4 सेमी
प्रिंट परिमाण - 17x23 सेमी (पूरा पृष्ठ)
17x11 सेमी (आधा पृष्ठ)

भुगतान की विधि
- क्रेडिट कार्ड एवं इंटरनेट द्वारे से भुगतान करें।
- बैंक विवरण निम्न प्रकार है:-
  बैंक का नाम केन्द्रीय बैंक
  खाता संख्या: 3159101000299
  आईएफएससी कोड: CNRB0003159
  एमआईसीआर कोड: 110015187
- एनबीटी से निकाल से भुगतान करें।
- एनबीटी का नाम दिये गए भुगतान के दस्तावेज में प्रमाण, एनबीटी कार्यालय को मेज दिये जाएँ।